Language and Learning foundation

Strong Foundation, Stronger Future

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

unicef
for every child

भाषायी मानचित्रण

छत्तीसगढ़ के शासकीय स्कूलों की भाषायी परिस्थिति

सर्वेक्षण रिपोर्ट

© लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन
इस रिपोर्ट या इसके किसी अंश का किसी भी तरह प्रकाशन, वितरण या पुनः प्रकाशन लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन की लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

विषय सूची

		पृष्ठ संख्या
	प्रस्तावना	1
	आभार	2
	शब्दावली	3
	चित्रों एवं तालिकाओं की सूची	4
	सारांश	5
1.	भाषायी मानचित्रण (सर्वेक्षण) : यह क्या है? इसकी क्या जरूरत है?	6
2.	छत्तीसगढ़ : राज्य में भाषायी विविधता का स्वरूप कैसा है?	9
3.	छत्तीसगढ में भाषायी सर्वेक्षण : पद्धति	11
	3.1. भाषायी सर्वेक्षण के उद्देश्य	11
	3.2. सर्वेक्षण की रूपरेखा व क्रियान्वयन	11
	3.3. अध्ययन की सीमाएँ	13
4.	छत्तीसगढ़ में भाषायी सर्वेक्षण : मुख्य नतीजे	14
	4.1. कक्षा-1 के बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ	14
	4.2. हिन्दी में कक्षा-1 के बच्चों की निपुणता	15
	4.2.1. हिन्दी में सीमित एवं संतोषजनक निपुणता वाले बच्चे - व्यापक स्थिति	18
	4.3. सीखने में मध्यम से गंभीर स्तर तक की कठिनाइयों का सामना करने वाले बच्चों के भाषा समूह	18
	4.4. शिक्षकों की भाषायी निपुणता	22
	4.4.1. बच्चों की घर की भाषा में शिक्षकों की निपुणता	22
	4.4.2. हिन्दी में शिक्षकों की निपुणता	24
	4.5. स्कूलों के सामाजिक-भाषायी प्रकार	25
	4.5.1. प्रकार-I के स्कूल	27
	4.5.2. प्रकार-II के स्कूल	28
	4.5.3. प्रकार-III के स्कूल	30
	4.5.4. प्रकार-IV के स्कूल	31
5.	अनुशंसाएँ	33
	5.1. बहुभाषी शिक्षा की विभिन्न पद्धतियों का सुझाव	33

		पृष्ठ संख्या
	5.1.1. पद्धति 1 : मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (MTB - MLE)	34
	5.1.2. पद्धति 2 : बच्चों की प्रथम भाषा (L1) का मौखिक रूप से व्यापक और रणनीतिक प्रयोग और L2 शिक्षण का औपचारिक माध्यम।	34
	5.1.3. पद्धति 3 : जब शिक्षक बच्चों की भाषा नहीं जानते हैं	36
	5.1.4. पद्धति 4 : कक्षा की बहुभाषिकता का एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल करते हुए कई भाषाओं में काम करना	36
	5.1.5. अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों तथा भिन्न भाषायी क्षेत्र में आकर बसे प्रवासी मजदूरों के बच्चों के लिए रणनीतियाँ	37
	5.2. सामाजिक-भाषायी परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग प्रकारों के लिए उपुयक्त बहुभाषी शिक्षा की पद्धतियाँ	38
6.	निष्कर्ष	41
7.	राज्य स्तरीय बहुभाषी शिक्षा कार्यशाला की कार्रवाई का विवरण और मुख्य सुझाव	42
	परिशिष्ट क	46
	परिशिष्ट ख	47
	परिशिष्ट ग	48
	परिशिष्ट घ	49
	परिशिष्ट च	50
	परिशिष्ट छ	51
	परिशिष्ट ज	53
	पद्धति 1 का विवरण : मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (MTB - MLE)	53
	पद्धति 2 का विवरण : बच्चों की प्रथम भाषा (L1) का मौखिक रूप से व्यापक और रणनीतिक प्रयोग और L2 शिक्षण का औपचारिक माध्यम	54

प्रस्तावना

मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़ और राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT) ने लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, (LLF) नई दिल्ली की साझेदारी में छत्तीसगढ़ के 29,755 प्राइमरी स्कूलों में भाषायी सर्वेक्षण पूरा कर लिया है। इस सर्वे से इन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की घर की भाषा और स्कूली भाषा के फासले को समझने में बहुत मदद मिलेगी। इस सर्वे रिपोर्ट में 29,755 स्कूलों की कक्षा-1 के 4,12,973 बच्चों की स्थितियों के बारे में जानकारियाँ दर्ज की गई हैं। ये स्कूल राज्य के 28 जिलों के 146 विकासखंडों में स्थित 2,451 संकुलों में फैले हुए हैं। सर्वे में बच्चों की घर की और स्कूली भाषा में शिक्षकों की निपुणता को मापने का प्रयास किया गया और इसके आधार पर स्कूलों का वर्गीकरण किया गया।

इस सर्वे का उद्देश्य राज्य को बहुभाषी शिक्षा के लिए तैयार करने पर केंद्रित था, ताकि बुनियादी साक्षरता के साथ-साथ समझते हुए सीखने के लिए बच्चों के भाषायी बाल अधिकार को बहाल किया जा सके। भारत के संविधान के अनुच्छेद 350ए में कहा गया है कि चाहे कितनी भी सामुदायिक-भाषायी विविधता हो, सभी बच्चों को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए, जिसके माध्यम से राज्य मानव विकास के अपने लक्ष्य को हासिल कर सके।

छत्तीसगढ़ में 93 से ज्यादा भाषाएँ (या उनकी किस्में) बोली जाती हैं और राज्य में शिक्षण का माध्यम हिन्दी भाषा है, यानी यहाँ हिन्दी माध्यम में पढ़ाई होती है। राज्य में 32 प्रतिशत अनुसूचित जनजातियाँ हैं, जिनकी अपनी सामुदायिक भाषाएँ हैं। ये समुदाय मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के उत्तर व दक्षिणी भाग में बसे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार, सभी बच्चों को अपने बौद्धिक विकास के लिए अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में अपनी घर की भाषाओं तक समान पहुँच मिलनी चाहिए। इस भाषा सर्वेक्षण ने सबसे वंचित बच्चों के लिए सीखने के अवसरों की एक नई दुनिया खोल दी है। इस रिपोर्ट के माध्यम से राज्य एक ऐसी समग्र अकादमिक योजना बना सकता है, जिसमें सभी बच्चे अपनी घर की भाषा में शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे और अपनी राजकीय भाषा हिन्दी तथा अंतरराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी में भी महारत हासिल कर पाएँगे।

सर्वेक्षण में पता चला है कि लगभग 75 प्रतिशत स्कूलों में बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच अंतर की वजह से बच्चे मध्यम से गंभीर स्तर तक के शैक्षिक कठिनाइयों का सामना करते हैं। लिहाजा, इस सर्वे के नतीजों से शैक्षिक योजनाकारों को संदर्भ के अनुकूल भाषा के प्रयोग तथा घर की भाषा में पाठ्यचर्या तैयार करने में मदद मिलेगी। इसके आधार पर वे शिक्षकों को भी शिक्षाशास्त्रीय मानकों की निपुण भारत में दी गई परिभाषा के अनुसार भाषायी शिक्षाशास्त्र का प्रशिक्षण दे सकेंगे। राज्य सरकार ने राज्य की 19 भाषाओं में कुछ कार्यक्रम तैयार किए हैं और कुछ अन्य भाषाओं को भी स्कूली पाठ्यचर्या में शामिल करना चाहती है।

इस प्रसंग में मैं शिक्षकों, सीआरसी, बीआरसी, बीईओ, बीईओ, डीएमसी, डीईओ, डाइट संस्थानों के प्रधानाचार्यों व स्टाफ तथा MLE के डीआरजी एवं एसआरजी के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस सर्वे व रिपोर्ट में लगातार अपना योगदान दिया। उनके परिश्रम से तैयार हुई इस रिपोर्ट से सबसे वंचित तबकों के बच्चों के हित में एक सशक्त बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम तैयार करने व क्रियान्वित करने में मदद मिलेगी। इनमें से बहुत सारे बच्चे कक्षा में घर की भाषा के अभाव की वजह से सीखने में दूसरे बच्चों के मुकाबले पिछड़ते चले जाते हैं।

अंत में मैं, निदेशक, एससीईआरटी छत्तीसगढ़ और उनके स्टाफ; निदेशक, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली तथा उनके स्टाफ और समग्र शिक्षा के सभी साथियों का आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस अंतिम रिपोर्ट को सामने लाने में अथक परिश्रम व योगदान दिया है।

नरेंद्र दुग्गा
राज्य मिशन निदेशक, समग्र शिक्षा
छत्तीसगढ़

आभार

इस सर्वेक्षण को संभव बनाने में लगातार सहयोग देने के लिए हम छत्तीसगढ़ के 'समग्र शिक्षा अभियान' के प्रतिनिधियों व कर्मचारियों का तहेदिल से शुक्रिया अदा करते हैं।

हम राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी), छत्तीसगढ़ से मिली तकनीकी सहायता एवं बहुमूल्य फीडबैक के लिए उनका भी धन्यवाद देते हैं।

हम राज्य संसाधन समूह (एसआरजी), जिला संसाधन समूह (डीआरजी) और संकुल समन्वयकों (सीएसी) का भी आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने उन्मुखीकरण कार्यक्रमों के आयोजन में लगातार योगदान दिया।

हम उन तमाम शिक्षकों का भी धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने भाषायी सर्वेक्षण प्रपत्र भरने के लिए अपना बहुमूल्य समय दिया।

यूनिसेफ से मिली उदार सहायता के बिना यह रिपोर्ट संभव नहीं हो सकती थी।

शब्दावली

प्रथम भाषा/घर की भाषा/मातृभाषा/L-1 : यह वो भाषा है, जिसे बच्चा सबसे अच्छी तरह जानता है। यानी ये वो भाषा है, जिसे वह पूर्व प्राथमिक शिक्षा या प्राइमरी स्कूल में दाखिला लेने से पहले ही भली-भाँति समझना और बोलना सीख चुका है। आमतौर पर ये मातृभाषा या घर पर बोली जाने वाली भाषा होती है। इस रिपोर्ट में हमने प्रथम भाषा/मजबूत भाषा/घर की भाषा आदि शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया है। बच्चे की प्रथम भाषा के लिए अक्सर हमने L-1 संकेताक्षर का भी प्रयोग किया है। L-1 का मतलब है लैंग्वेज-1 या फर्स्ट लैंग्वेज। बच्चे की L-1 में संबलपुरी, वागड़ी या तुलु जैसी स्थानीय/क्षेत्रीय भाषाएँ अथवा तमिल, गुजराती या ओडिया जैसी विभिन्न राज्यों की अधिकारिक भाषाएँ भी हो सकती हैं, जिनका बहुधा शिक्षा के माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

पढ़ाई का मीडियम/शिक्षण का माध्यम/मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन (MoI) : शिक्षण का माध्यम या MoI वह भाषा है, जिसमें पाठ्यपुस्तकें और अन्य शिक्षण-अधिगम सामग्री व आकलन के उपकरण बनाए जाते हैं। जिन राज्यों व महानगरों में भाषायी विविधता अधिक होती है, वहाँ कई भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। बहुत सारे स्कूलों में शिक्षक पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री को समझाने और बच्चों के साथ बात करने के लिए शिक्षा के माध्यम की बजाय स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा का ही सहारा लेते हैं। उदाहरण के लिए, बिहार के पूर्णिया जिले में बहुत सारे शिक्षक सुरजापुरी भाषा में पढ़ाते मिल जाते हैं, जबकि यहाँ शिक्षा का माध्यम हिन्दी है।

बहुभाषी शिक्षा/मल्टी लिंग्वुअल एजुकेशन (MLE) : बहुभाषी शिक्षा का मतलब ऐसी स्कूली शिक्षा है, जहाँ भाषा के अलावा अन्य विषयों की पढ़ाई-लिखाई दो या अधिक भाषाओं में होती है।

चित्रों एवं तालिकाओं की सूची

चित्र

चित्र 1 : बहुभाषी कक्षाओं में मौजूद भाषायी स्थितियों के प्रकार
चित्र 2 : छत्तीसगढ़ का जिलेवार नक्शा
चित्र 3 : भाषा मानचित्रण सर्वे के वेबफॉर्म का चित्र
चित्र 4 : हिन्दी में सीमित, संतोषजनक और अच्छी निपुणता वाले कक्षा-1 के बच्चों के अनुसार स्कूलों का वितरण
चित्र 5 : हिन्दी में सीमित निपुणता वाले बच्चों की सबसे ज्यादा संख्या वाले स्कूलों का जिलेवार वितरण
चित्र 6 : हिन्दी में संतोषजनक और अच्छी निपुणता वाले बच्चों के स्कूलों की सबसे ज्यादा संख्या वाले जिले
चित्र 7 : प्रकार-1 के स्कूलों का जिलेवार वितरण
चित्र 8 : प्रकार-2 के स्कूलों का जिलेवार वितरण
चित्र 9 : प्रकार-3 के स्कूलों का जिलेवार वितरण

तालिकाएँ

तालिका 1 : छत्तीसगढ़ में कक्षा-1 के बच्चों में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली 10 प्रमुख भाषाएँ
तालिका 2 : छत्तीसगढ़ में सबसे कम साक्षरता दर वाले जिलों में साक्षरता का स्तर
तालिका 3 : कोई आदिवासी भाषा बोलने वाले बच्चों की उपस्थिति वाले स्कूलों की संख्या
तालिका 4 : ऐसे स्कूलों की संख्या जिनमें प्रवासी या अंतरराज्यीय सीमा के आसपास रहने वाले बच्चे पढ़ते हैं और जो कोई भिन्न क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं
तालिका 5 : ऐसे बच्चों वाले स्कूलों की संख्या, जो कोई ऐसी भाषा बोलते हैं, जिसे हिन्दी के अंतर्गत समूहबद्ध मातृभाषा माना जाता है
तालिका 6 : समूह-1, समूह-2 और समूह-3 में मध्यम से गंभीर स्तर तक की भाषायी कठिनाई से जूझने वाले बच्चों का वितरण
तालिका 7 : बच्चों की घर की भाषाओं में शिक्षकों की निपुणता का जिलेवार ब्यौरा
तालिका 8 : हिन्दी में शिक्षकों की निपुणता
तालिका 9 : अलग-अलग सामाजिक-भाषायी प्रकारों में आने वाले स्कूलों की संख्या (और प्रतिशत)
तालिका 10 :जहाँ 90 प्रतिशत से ज्यादा बच्चे घर की एक भाषा का प्रयोग करते हैं और शिक्षक भी बच्चों की भाषा समझते/बोलते हैं, ऐसे प्रकार-II के स्कूलों में बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ
तालिका 11 :प्रकार-II के स्कूलों की सबसे अधिक संख्या वाले जिले
तालिका 12 :जहाँ 90 प्रतिशत से अधिक बच्चे किसी एक भाषा का प्रयोग करते हैं और शिक्षक बच्चों की घर की भाषा को नहीं समझते, ऐसे प्रकार-III के स्कूलों में बोली जाने वाली भाषाएँ
तालिका 13 :प्रकार-III के स्कूलों की सबसे ज्यादा संख्या वाले जिले
तालिका 14 :प्रकार-IV के स्कूलों में सबसे प्रचलित संपर्क भाषाएँ
तालिका 15 :प्रकार-IV के सबसे ज्यादा स्कूलों वाले जिले
तालिका 16 :विभिन्न सामाजिक-भाषायी प्रकारों के अंतर्गत आने वाले स्कूलों के लिए अनुशंसित बहुभाषी शिक्षा की पद्धतियाँ

सारांश

छत्तीसगढ़ एक बहुभाषी राज्य है। यहाँ के लोग 93 से अधिक भाषाओं (या उनकी किस्मों) का प्रयोग करते हैं। यहाँ के शासकीय स्कूलों में शिक्षण का माध्यम मुख्य रूप से हिन्दी है। शोध बताते हैं कि जब स्कूल की भाषा बच्चों के घर की भाषा से भिन्न होती है, तो बच्चों को स्कूल के प्रारंभिक वर्षों में भाषा संबंधी बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

एक उचित बहुभाषी शिक्षा की पद्धति तैयार करने के लिए हमारे पास प्रत्येक स्कूल की भाषायी परिस्थितियों का राज्यव्यापी विश्लेषण होना चाहिए। इस रिपोर्ट में छत्तीसगढ़ के 29,755 स्कूलों में किए गए 'भाषायी सर्वेक्षण' के नतीजों का विस्तृत ब्यौरा दिया गया है। यह सर्वेक्षण इन स्कूलों की पहली कक्षा की स्थितियों पर आधारित है। भारत में यह स्कूली शिक्षा का भाषायी मानचित्रण तैयार करने की आज तक की सबसे बड़ी योजना थी। इस सर्वेक्षण के दौरान कक्षा शिक्षकों को एक ऑनलाइन सर्वेक्षण प्रपत्र भरने के लिए दिया गया, जिसमें उन्हें अपनी कक्षाओं की सामाजिक-भाषायी स्थितियों का ब्यौरा देना था। इसमें उनसे यह भी पूछा गया था कि उनकी कक्षा के बच्चे कितनी भाषाएँ (प्रथम भाषा/L1) बोलते हैं, कौन-सी भाषा को बोलने वाले बच्चों की संख्या कितनी है, शिक्षण के माध्यम (जोकि अधिकांशतः हिन्दी है) में बच्चों की निपुणता का स्तर कैसा है और बच्चों की भाषा पर शिक्षकों की निपुणता कितनी है। इस सर्वेक्षण के माध्यम से जो आँकड़े इकट्ठे किए गए हैं, उनके विश्लेषण के आधार पर अलग-अलग स्कूलों की बहुभाषी स्थितियों को समझने में काफी मदद मिली है। कक्षा में अलग-अलग भाषाओं के बोलने वाले बच्चों की संख्या, घर की भाषाओं और स्कूल की भाषा के संबंधों और बच्चों के घर की भाषाओं में शिक्षकों की निपुणता जैसी कसौटियों के आधार पर इन स्कूलों को चार मुख्य सामाजिक-भाषायी प्रकारों में बाँटा गया।

सर्वेक्षण से पता चलता है कि लगभग 75 प्रतिशत स्कूलों (प्रकार-II, III, और IV) में घर की भाषा और स्कूली भाषा में अंतर के कारण बच्चों को सीखने में मध्यम से गंभीर स्तर तक की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस तरह के सबसे अधिक स्कूल प्रकार-II के हैं, जिसमें कक्षा 1 के 90 प्रतिशत से अधिक बच्चे घर की एक भाषा का प्रयोग करते हैं, मगर उनकी भाषा हिन्दी से भिन्न है और स्कूल में दाखिले के समय इन बच्चों के पास हिन्दी में बहुत मामूली निपुणता होती है। इसके अलावा कक्षा-1 में दाखिले के समय लगभग 95 प्रतिशत बच्चे किसी ऐसी घर की भाषा में बात कर रहे होते हैं, जो हिन्दी से भिन्न होती है।

रिपोर्ट के अंतिम हिस्से में बहुभाषी शिक्षा की अलग-अलग पद्धतियों का भी सुझाव दिया गया है, जिनको इन अलग-अलग प्रकार के स्कूलों में लागू किया जाए तो बच्चों की भाषा संबंधी कठिनाइयों को कम करने में मदद मिल सकती है।

शुरुआती वर्षों (आधारभूत एवं तैयारी के चरण, जिनको राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में परिभाषित किया गया है) में जो कुछ पढ़ाया जा रहा है, बच्चे उसको समझ ही न सकें, इससे बचने के लिए ये जरूरी है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में उनकी परिचित या पहली भाषा का ही इस्तेमाल किया जाए। इससे बच्चों के समग्र विकास में मदद मिलती है। घर की भाषा को इस्तेमाल करने तथा क्षेत्रीय भाषा एवं अंग्रेजी में भी निपुणता हासिल करने की इस समग्र पद्धति को ही बहुभाषी शिक्षा (मल्टीलिंग्वल एजुकेशन-MLE) कहा जाता है।

1. भाषायी मानचित्रण (सर्वेक्षण)
यह क्या है? इसकी क्या जरूरत है?

शिक्षा में भाषा ही सब कुछ नहीं है,
लेकिन भाषा के बिना शिक्षा में सब कुछ, कुछ भी नहीं है।[1]

बच्चों की शिक्षा के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, वह न केवल स्कूल में उनके सीखने पर प्रभाव डालती है, बल्कि इस बात पर भी गहरा प्रभाव डालती है कि वे अपनी पहचान को किस तरह से देखते हैं। भाषा सामाजिक पुनरुत्पादन की सामाजिक क्रिया है और समाज स्वाभाविक बहुभाषी वातावरण में ही फलता-फूलता है। भाषा संचार का साधन भी होती है और सोचने, निष्कर्ष निकालने व तर्क के माध्यम से दुनिया को समझने का एक जरिया भी होती है। लिहाजा, भाषा सिर्फ एक 'उपकरण' भर नहीं होती, बल्कि यह सीखने व समझने की प्रक्रिया का एक अभिन्न और अपृथकनीय लक्ष्य भी होती है। प्रारम्भिक भाषा और साक्षरता के मजबूत कौशल औपचारिक स्कूली वातावरण में सीखने की तमाम प्रक्रियाओं का आधार होते हैं। विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों की शिक्षा में उनकी मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग करने के महत्व के बारे में आम सहमति है। हमारे देश में विभिन्न वैधानिक एवं नीतिगत दस्तावेजों में भी मातृभाषा आधारित शिक्षा के महत्व पर बहुत जोर दिया गया है।

राज्य के भीतर प्रत्येक सरकारी एवं प्रत्येक स्थानीय निकाय की जिम्मेदारी है कि वह भाषायी अल्पसंख्यक समूह से आने वाले बच्चों को प्राथमिक अवस्था में मातृभाषा में शिक्षा देने के लिए सभी उचित सुविधाएँ मुहैया कराएँगे। राष्ट्रपति किसी भी राज्य को आवश्यकता के अनुसार अथवा ऐसी सुविधाएँ मुहैया कराने के औचित्य के आधार पर इस आशय के निर्देश जारी कर सकते हैं।

– भारतीय संविधान का अनुच्छेद 350ए

जहाँ भी संभव हो कम से कम कक्षा 5 तक मगर संभव हो तो कक्षा 8 तक और उसके बाद भी शिक्षा का माध्यम घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा ही होगी।

– राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020[2]

जब बच्चों को एक ऐसी भाषा के माध्यम से सीखने के लिए मजबूर किया जाता है, जिसे वे अच्छी तरह नहीं समझते, यानी जब शिक्षण का माध्यम घर में बोली जाने वाली भाषा से भिन्न होता है तो सीखने की बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करते हैं। इससे न केवल उनकी अकादमिक सफलता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, बल्कि उनके आत्मसम्मान को भी गहरी ठेस पहुँच सकती है। जैसे-जैसे ये बच्चे प्राइमरी स्कूल की कक्षाओं में आगे बढ़ते जाते हैं, 'समझने में अक्षमता' का बोझ भी बढ़ता चला जाता है क्योंकि हर नई कक्षा में पाठ्चर्यात्मक विषयवस्तु व भाषा और जटिल होती जाती है। अनुमान लगाया जाता है कि हमारे देश में प्राइमरी स्कूल जाने वाले 25% बच्चे घर की भाषा या स्कूल की भाषा या स्कूल में प्रयोग किए जाने वाले शिक्षण के माध्यम में अंतर के कारण मध्यम से गंभीर कठिनाइयों का सामना करते हैं।[3]

---

[1] *वुल्फ, ई., 'बैकग्राउंड एण्ड हिस्ट्री - लैंग्वेज पॉलिटिक्स एण्ड प्लानिंग इन अफ्रीका', ए. आउने एवं सी. ग्लांज द्वारा संपादित ऑप्टिमाइज़िंग लर्निंग, एजुकेशन एण्ड प्लानिंग इन अफ्रीका : दि लैंग्वेज फैक्टर' में।*

[2] *https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf*

[3] *झिंगरन डी., (2005) लैंग्वेज डिसएडवांटेज : दि लर्निंग चैलेंज इन प्राइमरी एजुकेशन, दिल्ली, एपीएच पब्लिशिंग।*

इस तरह, शिक्षा-में-भाषा नीतियों के तहत इस बात पर बहुत गंभीरता से ध्यान दिया जाना चाहिए कि शुरुआती वर्षों की शिक्षा में बच्चों की घर की भाषाओं का समावेश कैसे किया जाए और पाठ्यचर्या में दूसरी एवं अतिरिक्त भाषाओं को पढ़ाने के लिए ठोस शिक्षाशास्त्रीय पद्धतियाँ कैसे विकसित की जाएँ। इसके लिए सबसे अच्छा समाधान तो यही है कि बच्चों की पहली (या घर की) भाषा को ही कई साल तक शिक्षण के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाए और अधिकृत सरकारी भाषा (यदि वह बच्चों की पहली भाषा नहीं है) और अंग्रेजी जैसी अतिरिक्त भाषाओं से उन्हें धीरे-धीरे परिचित कराया जाए।

मगर, ज्यादातर भारतीय कक्षाओं में सीखने-पढ़ाने की प्रक्रिया में बच्चे की भाषा को शामिल करना कोई सरल काम नहीं है। एक औसत भारतीय कक्षा में प्रायः कई अलग-अलग भाषाओं के बच्चे होते हैं। बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा का अंतर भी हर स्कूल में एक जैसा नहीं होता। उदाहरण के लिए, हो सकता है एक स्कूल में ज्यादातर बच्चे किसी ऐसी भाषा में बात कर रहे हों, जो स्कूल में शिक्षण के माध्यम के रूप में प्रयोग की जा रही भाषा की 'बोली' या उपभाषा ही मानी जाती है। इसके विपरीत, किसी अन्य स्कूल में एक ही कक्षा में दो या तीन घर की अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले बच्चे हो सकते हैं। किसी अन्य कक्षा में बच्चे किसी आदिवासी भाषा में बात करते मिलेंगे और यह भाषा शिक्षण के माध्यम की तुलना में बिल्कुल अलग भाषा परिवार से संबद्ध होगी। लिहाजा, शैक्षिक नीति निर्माताओं के लिए जरूरी है कि बहुभाषी शिक्षा के विषय में कारगर नीतियाँ तैयार करने के लिए उनके पास राज्य की सामाजिक-भाषायी स्थिति का पूरा अध्ययन और हालात की एक व्यावहारिक समझ हो।

स्कूल का 'भाषायी मानचित्रण' एक ऐसा सर्वे होता है, जिसमें स्कूल में दाखिले के समय बच्चों की भाषा, स्कूल में शिक्षण का माध्यम, सीखने-सिखाने के लिए प्रयोग होने वाली भाषा, शिक्षकों को आने वाली भाषाओं, कक्षा का संयोजन, बच्चों की घर की व स्कूली भाषा के संबंध तथा घर की व स्कूली भाषा के प्रति रवैये आदि सामाजिक-भाषायी आयामों पर व्यवस्थित ढंग से सूचनाओं का दस्तावेजीकरण व संकलन किया जाता है।

जब भाषायी मानचित्रण पूरे राज्य के स्तर पर किया जाता है ताकि शैक्षिक नीति निर्धारण को दिशा दी जा सके तो स्कूल स्तरीय सर्वेक्षण के आँकड़ों को आमतौर पर कुछ प्रमुख सामाजिक-भाषायी प्रकारों में बाँट दिया जाता है। इससे नीति निर्माताओं को सभी प्रकारों के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की जरूरतों के अनुसार शिक्षा-में-भाषा नीतियाँ विकसित करने में मदद मिल सकती है।

बहुभाषी कक्षाओं में मिलने वाली विभिन्न सामाजिक-भाषायी स्थितियों के अलग-अलग प्रकारों का विवरण चित्र-1 में दिया गया है।

प्रकार	विवरण
प्रकार-I	• ज्यादातर बच्चे किसी ऐसी भाषा में बात करते हैं, जो स्कूल की भाषा से मिलती-जुलती है। • शिक्षक उस भाषा को समझता/समझती है।
प्रकार-II	• कक्षा-1 में दाखिले के समय ज्यादातर बच्चों की शिक्षण के माध्यम की सीमित समझ होती है या कोई समझ नहीं होती है। • लगभग सभी बच्चों (90 प्रतिशत से अधिक) की घर की भाषा एक ही है। • शिक्षक बच्चों की घर की भाषा को समझते/बोलते हैं।
प्रकार-III	• कक्षा-1 में दाखिले के समय ज्यादातर बच्चों की शिक्षण के माध्यम की सीमित समझ होती है या कोई समझ नहीं होती है। • लगभग सभी बच्चों (90 प्रतिशत से अधिक) की घर की भाषा समान है। • शिक्षक बच्चों की घर की भाषा समझते/बोलते नहीं हैं।

प्रकार	विवरण
प्रकार-IVa	• कक्षा-1 में दाखिले के समय ज्यादातर बच्चों की शिक्षण के माध्यम की सीमित समझ होती है या कोई समझ नहीं होती है। • बच्चे दो या अधिक भाषायी समूहों से आते हैं। • कक्षा में एक संपर्क भाषा मौजूद है (बच्चों की भाषाओं में से ही कोई एक भाषा) और ज्यादातर बच्चे (90 प्रतिशत से अधिक) उस संपर्क भाषा को समझते या बोलते हैं।
प्रकार-IVb	• कक्षा-1 में दाखिले के समय ज्यादातर बच्चों की शिक्षण के माध्यम की सीमित समझ होती है या कोई समझ नहीं होती है। • बच्चे एक या अधिक भाषायी समूहों से आते हैं। • कक्षा में कोई संपर्क भाषा नहीं है, यदि है तो ज्यादातर बच्चे (90 प्रतिशत से अधिक) उस संपर्क भाषा समझते/बोलते नहीं हैं।

चित्र 1[4]: बहुभाषी कक्षाओं में मौजूद भाषायी स्थितियों के प्रकार

भाषायी मानचित्रण सर्वे से नीति निर्माताओं को स्कूलों में मौजूद अलग-अलग तरह की भाषायी स्थितियों को समझने और इसके आधार पर प्रत्येक प्रकार के लिए एक उचित बहुभाषी शिक्षा प्रक्रिया की योजना बनाने में मदद मिलती है। शिक्षा विभाग द्वारा शुरू किया गया निपुण भारत (नेशनल इनिशिएटिव फॉर प्रॉफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमरेसी) कार्यक्रम इसलिए शुरू किया गया है, ताकि कक्षा-3 के आखिर तक सभी बच्चों को आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान के कौशल प्राप्त हो सके। इसी कार्यक्रम में राज्य सरकारों को यह भी सुझाव दिया गया है कि वे बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रमों की योजना तैयार करने के लिए भाषायी सर्वेक्षण करें।

एफएलएन मिशन की सफलता के लिए राज्य स्तर पर बहुभाषी शिक्षा पर जोर देना बहुत जरूरी है। राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों को भाषायी मानचित्रण पर ध्यान देना चाहिए, जिससे भाषायी स्थिति को समझकर उचित शैक्षिक कार्यक्रम तैयार किए जा सकें, शिक्षण के माध्यम के मुद्दों पर शिक्षा व्यवस्था का लगातार क्षमतावर्द्धन किया जा सके, बच्चों की घर की भाषा का इस्तेमाल करने या बहुभाषी शिक्षा की पद्धति अपनाने के लिए सरल दिशानिर्देश व रणनीतियाँ तय की जा सकें और शोध व एडवोकेसी के लिए वातावरण तैयार किया जा सके।

- निपुण भारत दिशानिर्देश

जब कोई राज्य भाषायी मानचित्रण सर्वेक्षण का फैसला लेता है तो यह बहुभाषी शिक्षा सिद्धांतों के आधार पर एक नई तरह की कक्षा की कल्पना का प्रारम्भबिंदु होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के बाद छत्तीसगढ़ पहला ऐसा राज्य है, जहाँ राज्य के सभी सरकारी स्कूलों के भाषायी सर्वेक्षण का फैसला लिया गया है। प्रस्तुत रिपोर्ट में छत्तीसगढ़ के इसी भाषायी मानचित्रण सर्वेक्षण के नतीजों का विस्तृत ब्यौरा दिया गया है। इस रिपोर्ट में संकलित आँकड़ों का ठोस व्याख्यात्मक विश्लेषण पेश किया गया है और राज्य भर के बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रमों के लिए नीति स्तरीय सिफारिशें भी दी गई हैं।

[4] *झिंगरन एवं अन्य, अर्ली लिट्रेसी एंड मल्टीलिंग्वल एजुकेशन इन साउथ एशिया, यूनिसेफ, 2019*

[5] *https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nipun_bharat_eng1.pdf*

2. छत्तीसगढ़

राज्य में भाषायी विविधता का स्वरूप कैसा है?

चित्र 2: छत्तीसगढ़ का जिलेवार नक्शा

छत्तीसगढ़ (भारत की जनगणना , 2011)

राज्य की जनसंख्या	:	2,55,45,198
जिलों की संख्या	:	28
अनुसूचित जनजाति आबादी	:	78,22,902
राज्य की आधिकारिक भाषा	:	छत्तीसगढ़ी
सरकारी स्कूलों में शिक्षण का माध्यम	:	हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत

छत्तीसगढ़ भारतीय संघ के सबसे युवा राज्यों में से एक है। इसका औपचारिक गठन 1 नवंबर 2000 को किया गया था। छत्तीसगढ़ भारत के मध्य में स्थित है और देश के सात राज्यों से इसकी सीमाएँ मिलती हैं। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश, उत्तर-पूर्व में झारखंड, पूर्व में ओडिशा, पश्चिम व उत्तर-पश्चिम में मध्य प्रदेश, दक्षिण-पश्चिम में महाराष्ट्र व तेलंगाना तथा दक्षिण-पूर्व में आंध्र प्रदेश स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की कुल आबादी 2.56 करोड़ है।

छत्तीसगढ़ की भाषाओं में एक अलग ही अनूठापन और विशिष्टता देखने को मिलती है। राज्य के शहरों में काफी हद तक हिन्दी बोली जाती है, मगर छत्तीसगढ़ के भाषायी फलक पर सबसे व्यापक उपस्थिति छत्तीसगढ़ी भाषा की ही है। यह भाषा बघेली और अवधी से काफी निकट पड़ती है।

छत्तीसगढ़ की भाषाओं पर हिन्द-आर्य भाषा परिवार, द्रविड़ भाषा परिवार और मुंडा भाषा परिवार, इन तीन भाषा परिवारों का काफी असर दिखाई पड़ता है। कोरकू, खड़िया और कोरबा छत्तीसगढ़ की प्रमुख मुंडा बोलियाँ हैं। दक्षिणी छत्तीसगढ़ में द्रविड़ियन भाषा परिवार की कई बोलियाँ मिलती हैं। विशेषकर, बस्तर व आसपास के इलाकों में। छत्तीसगढ़ की भाषाओं में हिन्द-आर्य बोलियों का प्रभुत्व है। छत्तीसगढ़ में बोली जाने वाली 93 भाषाओं/बोलियों में से 70 भाषाएँ हिन्द-आर्य भाषा परिवार की सदस्य हैं। सादरी और हल्बी यहाँ की दो प्रमुख हिन्द-आर्य बोलियाँ हैं, जो कई आदिवासी समुदायों में बोली जाती हैं।

छत्तीसगढ़ की आबादी में आदिवासी आबादी का हिस्सा लगभग 32 प्रतिशत है। राज्य में 42 अनुसूचित जनजातियाँ हैं। उनकी अपनी अनूठी परंपराएँ, संस्कृति और भाषाएँ हैं। भाषा परिवार के अनुसार जनजातीय समुदायों का वितरण इस प्रकार दिखाई पड़ता है :

1. **हिन्द-आर्य भाषा परिवार :** इस समूह में वे जनजातीय समुदाय आते हैं, जो स्थानीय भाषा बोलते हैं। इस समूह में कांवर, बिंझवार, भुजिया, धनवार, भैना, बैगा, हल्बा, जनजातीय समुदाय आते हैं, जो छत्तीसगढ़ी बोलते हैं।
2. **ऑस्ट्रिक भाषा परिवार :** इस समूह में ऐसे जनजातीय समुदाय आते हैं, जो कोलारी एवं मुंडारी भाषा समूहों की भाषाएँ बोलते हैं। जैसे- मुंडा, कोरबा, मांझी, खड़िया, गड़वा, बिरहोर तथा सावरा।
3. **द्रविड़ भाषा परिवार :** इस समूह में वे जनजातियाँ आती हैं, जो द्रविड़ भाषा परिवार की बोलियाँ बोलते हैं। जैसे- गोंड, ओरांव, खोंढ, डोरला, परजा, मड़िया गोंड, मुरिया गोंड, और धुरवा आदि।

---

[6] रिपोर्ट का यह भाग डॉ. महेंद्र कुमार मिश्रा द्वारा लिखित 'रिपोर्ट ऑन लैंग्वेज डेवलपमेंट इन छत्तीसगढ़' से लिया गया है। यह रिर्पाट सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज़, मैसूर में जमा कराई गई थी।

3. छत्तीसगढ़ में भाषायी सर्वेक्षण पद्धति

छत्तीसगढ़ में किए गए भाषायी सर्वेक्षण का दायरा

जिलों की संख्या : 28

शामिल विकाखंडों की संख्या : 146

शामिल संकुलों की संख्या : 2451

सहभागी स्कूलों की संख्या : 29,755

प्रतिनिधित्व करने वाले कक्षा-1 के बच्चों की संख्या : 4,12,973

3.1. भाषायी सर्वेक्षण के उद्देश्य

छत्तीसगढ़ का यह भाषायी सर्वेक्षण राज्य के प्राइमरी स्कूलों में मौजूद बहुभाषी यथार्थ को समझने के उद्देश्य से किया गया था। यह सर्वेक्षण इस समझ के साथ कराया गया था कि जिन बच्चों के घर की भाषा स्कूल की भाषा से अलग होती है, उन्हें स्कूल के प्रारम्भिक वर्षों में भाषा संबंधी बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार बहुभाषी शिक्षा की पद्धतियाँ कुछ परिस्थितियों में लाभकारी साबित होती हैं, जहाँ घर की भाषा और स्कूल की भाषा को सावधानीपूर्वक सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में शामिल किया जाता है। भाषायी सर्वेक्षण में छत्तीसगढ़ की प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों की घर की भाषाओं की संख्या व विविधता को जानने का प्रयास किया गया है, ताकि इन स्कूलों के लिए बहुभाषी शिक्षा के उचित मॉडल विकसित किए जा सकें। राज्य के सभी सरकारी स्कूलों के साथ-साथ जिलों एवं विकासखंडों के स्तर पर भी स्थिति को समझने की कोशिश की गई है।

सर्वेक्षण के कुछ मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे :

- स्कूलों की प्रारंभिक कक्षाओं के संदर्भ में जमीनी स्तर पर मौजूद बहुभाषी स्थितियों को समझना।
- प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों द्वारा बोली जाने वाली घर की भाषाओं की संख्या व विविधता को दर्ज करना।
- स्कूली भाषा यानी हिन्दी में बच्चों की निपुणता का अनुमान लगाना।
- यह जानना कि शिक्षक अपने बच्चों की घर की भाषाओं में खुद को किस हद तक निपुण मानते हैं।
- कुछ निश्चित सामाजिक-भाषायी कारकों के आधार पर स्कूलों की बहुभाषी स्थितियों को प्रकारों में बाँटना।
- अलग-अलग प्रकारों के स्कूलों व स्थितियों के लिए बहुभाषी शिक्षा की उपयुक्त पद्धतियाँ विकसित करना।

3.2. सर्वेक्षण की रूपरेखा व क्रियान्वयन

सर्वेक्षण उपकरण तैयार करने में लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन ने जरूरी तकनीकी सहायता प्रदान की। समग्र शिक्षा अभियान तथा एससीईआरटी, छत्तीसगढ़ ने इन उपकरणों की समीक्षा की और हर चरण में बहुमूल्य फीडबैक दिया।

सर्वेक्षण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए भाषायी मानचित्रण सर्वेक्षण हेतु एक टूलकिट भी तैयार की गई, जिसमें ये तत्व शामिल थे :

- भाषायी मानचित्रण सर्वे वेबफॉर्म [7]
- सर्वे टूल भरने के लिए दिशानिर्देश
- सर्वे फॉर्म भरने के लिए क्रमवार निर्देश देते हुए ओरिएंटेशन वीडियो

चित्र 3: भाषायी मानचित्रण सर्वेक्षण के वेबफॉर्म का चित्र

सभी शिक्षकों का कई चरणों में क्षमतावर्द्धन किया गया। सबसे पहले तो फेस टू फेस और ऑनलाइन सत्रों के माध्यम से भाषायी मानचित्रण के बारे में राज्य स्तरीय भाषा एवं MLE स्रोत समूहों का उन्मुखीकरण किया गया। राज्य स्रोत समूह द्वारा इस्तेमाल के लिए सत्र योजनाएँ एवं प्रस्तुतियाँ तैयार की गईं। राज्य संसाधन समूह ने शिक्षकों तथा संकुल स्तरीय अकादमिक समन्वयकों के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए।

अंत में, फरवरी से अप्रैल 2022 के बीच छत्तीसगढ़ के सभी जिलों में शिक्षकों ने अपने-अपने स्कूलों के स्तर पर इस रिपोर्ट के लिए सारे आँकड़ें एकत्रित किए।

जुलाई 2022 में शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ इस भाषायी मानचित्रण के नतीजों को साझा करने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, ताकि बहुभाषी शिक्षा की एक राज्यव्यापी योजना तैयार की जा सके। [8]

[7] *Thttp://llfsurvey.languageandlearningfoundation.org/llfsurvey-chhattisgarh-hindi/*

[8] *कार्यशाला से संबंधित विवरण अंत में देखे जा सकते हैं।*

3.3. अध्ययन की सीमाएँ

भाषायी मानचित्रण सर्वे की कुछ सीमाएँ भी गौरतलब हैं, जो नीचे दी गई हैं:

- सर्वेक्षण के आँकड़ें कक्षा के शिक्षकों द्वारा भरे गए हैं, लिहाजा इसकी सटीकता उनके उत्तरों पर निर्भर करती है।
- इसी तरह, स्कूली भाषा में बच्चों की निपुणता और बच्चों की घर की भाषाओं में शिक्षकों की निपुणता का आकलन भी खुद शिक्षकों की राय पर ही आधारित है, यह आकलन किसी भाषा निपुणता जाँच या परीक्षा पर आधारित नहीं है।
- प्रपत्र में कुछ विकल्पों की अनुपलब्धता भी एक सीमा थी। उदाहरण के लिए, भाषायी निपुणता को केवल 'सीमित', 'संतोषजनक', या 'अच्छी' की श्रेणियों में ही रखा जा सकता था। मगर ये विकल्प संभवत: पर्याप्त नहीं थे। प्रपत्र में शिक्षकों से पूछा गया था कि हिन्दी में पूरी कक्षा की निपुणता का औसत स्तर क्या है? इससे अलग-अलग बच्चों की हिन्दी में निपुणता का सटीक आकलन मिलना मुश्किल है।
- कुछ स्थानों पर प्रपत्र विभिन्न भाषाओं, भाषायी किस्मों या 'बोलियों' की बारीकियों को पकड़ने में सटीक रूप से सक्षम नहीं था। उदाहरण के लिए, देखने में आया कि 'संबलपुरी' भाषा को गलती से 'ओडिया' भाषा के रूप में चिह्नित किया गया, जबकि ये दोनों अलग-अलग भाषाएँ हैं। कुछ मामलों में, कुछ भाषाओं पर शिक्षकों ने निशान ही नहीं लगाए। उदाहरण के लिए, छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में बच्चे प्राय: 'बघेली' बोलते दिखाई पड़ते हैं, मगर ज्यादातर प्रपत्र में शिक्षकों ने इसे घर की भाषा के रूप में चिह्नित ही नहीं किया।
- शिक्षकों की पृष्ठभूमि से संबंधित कुछ जानकारियाँ, जैसे- उनके घर की भाषा और गृह जिले आदि का नाम भी दर्ज नहीं किया गया। नीतिगत समाधान तय करने, शिक्षकों की नए सिरे से तैनाती पर ध्यान देने के लिए इस तरह की जानकारी बहुत जरूरी थी। इस बात को भी दर्ज नहीं किया गया कि बच्चों की अलग-अलग घर की भाषाओं में अध्यापक/अध्यापिका की तुलनात्मक निपुणता कितनी है।
- भाषायी सर्वेक्षण केवल स्कूल शिक्षकों द्वारा संकलित की गई सूचनाओं तक ही सीमित था, इसलिए समुदाय के अन्य लोगों की सामाजिक-भाषायी स्थितियों पर समुदाय के अन्य लोगों की राय दर्ज नहीं की जा सकी।

4. छत्तीसगढ़ में भाषायी सर्वेक्षण
मुख्य नतीजे

4.1. कक्षा-1 के बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ

कक्षा-1 के बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं की कुल संख्या - 23[9]

इस स्कूल स्तरीय भाषा मानचित्रण से पता चला कि राज्य भर की कक्षाओं में 23 से अधिक घर की भाषाएँ हैं।

क्र.सं.	भाषा	कक्षा-1 में बोलने वाले बच्चों का %
1.	छत्तीसगढ़ी	65.83
2.	सरगुजिहा	9.38
3.	हिन्दी	5.65
4.	हल्बी	4.19
5.	सादरी	3.97
6.	गोंडी (दंतेवाड़ा)	2.33
7.	ओडिया	1.74
8.	गोंडी (बस्तर)	1.73
9.	भतरी	1.04
10.	कुडुख	0.7

तालिका-1: छत्तीसगढ़ में कक्षा-1 के बच्चों द्वारा सबसे ज्यादा बोली जाने वाली 10 प्रमुख भाषाएँ

राज्य में ऐसे बच्चों की बहुत बड़ी संख्या है, जिनकी मातृभाषा छत्तीसगढ़ी है। ऐसे बच्चों की संख्या 65 प्रतिशत से अधिक है। छत्तीसगढ़ी भाषा को भारत की जनगणना 2001 में 'हिन्दी के अंतर्गत मातृभाषा के समूह में रखा गया था।[10] मगर कुछ भाषाविद् मानते हैं कि छत्तीसगढ़ी हिन्दी से काफी भिन्न है। स्कूल स्तरीय भाषा सर्वे में जो आँकड़ें मिले हैं, उसके अनुसार राज्य के बहुत सारे जिलों में छत्तीसगढ़ी बहुलांश द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। इनमें बालोद, बलौदाबजार, बेमेतरा, बिलासपुर, धमतरी, दुर्ग, गरियाबंद, गोरेला पेंड्रा मरवाही, जांजगीर चांपा, कांकेर, कवर्धा (कबीरधाम), कोरबा, महासमुंद, मुंगेली, रायगढ़, रायपुर और राजनांदगाँव आदि जिले आते हैं।

कक्षा-1 के बच्चों में से लगभग 9 प्रतिशत सरगुजिहा बोलते हैं। छत्तीसगढ़ी की भांति सरगुजिहा भी एक हिन्द-आर्य भाषा है, जो

[9] *पूरे राज्य में जिन भाषाओं के बोलने वाले 10 से भी कम पाए गए, उनको हटा दिया गया है या उनको अन्य भाषा में शामिल कर लिया गया है।*

[10] *https://web.archive.org/web/20080201193939/http://www.censusindia.gov.in/Census_Data_2001/Census_Data_Online/Language/Statement1.htm*

पूर्वी हिन्दी उप-समूह से ताल्लुक रखती है। सरगुजिहा को प्रायः छत्तीसगढ़ी मान लिया जाता है, जो कि गलत है क्योंकि ये दोनों बिल्कुल अलग-अलग भाषाएँ हैं। सादरी एक और हिन्द-आर्य भाषा है, जिसे कक्षा-1 के लगभग 4 प्रतिशत बच्चे बोलते हैं। सरगुजिहा और सादरी राज्य के पूर्वी और उत्तरपूर्वी इलाकों में बोली जाती है। यहाँ सरगुजा, सूरजपुर, जशपुर, कोरिया और बलरामपुर जिले स्थित हैं।

राज्य के केवल लगभग 5 प्रतिशत बच्चों की घर की भाषा हिन्दी है। इस प्रकार, यद्यपि छत्तीसगढ़ के ज्यादातर स्कूलों में शिक्षण का माध्यम हिंदी है, मगर लगभग यहाँ के 95 प्रतिशत बच्चों की घर की भाषा हिन्दी नहीं है, वे कोई और भाषा बोलते हैं।

कक्षा-1 के बच्चों में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं का अगला समूह राज्य की कुछ आदिवासी भाषाओं का है। इनमें हल्बी, गोंडी (जिसकी दंतेवाड़ा और बस्तर में अपनी बोलियाँ हैं), भतरी और कुडुख प्रमुख हैं। ये कक्षा-1 के लगभग 10 प्रतिशत बच्चों की घर की भाषाएँ हैं।

कक्षा-1 में पड़ोसी राज्य ओडिशा की राजभाषा ओडिया बोलने वाले बच्चों की संख्या भी काफी है (1.74 प्रतिशत)। विशेषकर, महासमुंद और गरियाबंद जिलों में इस भाषा को बोलने वाले ज्यादा बच्चे हैं, क्योंकि ये जिले ओडिशा की सीमा पर पड़ते हैं।

राज्य में बोली जाने वाली सभी 23 भाषाओं की सूची तथा छत्तीसगढ़ के प्रत्येक जिले की 3 सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं का ब्यौरा आप परिशिष्ट क और परिशिष्ट ख में देख सकते हैं।

4.2. हिन्दी में कक्षा-1 के बच्चों की निपुणता

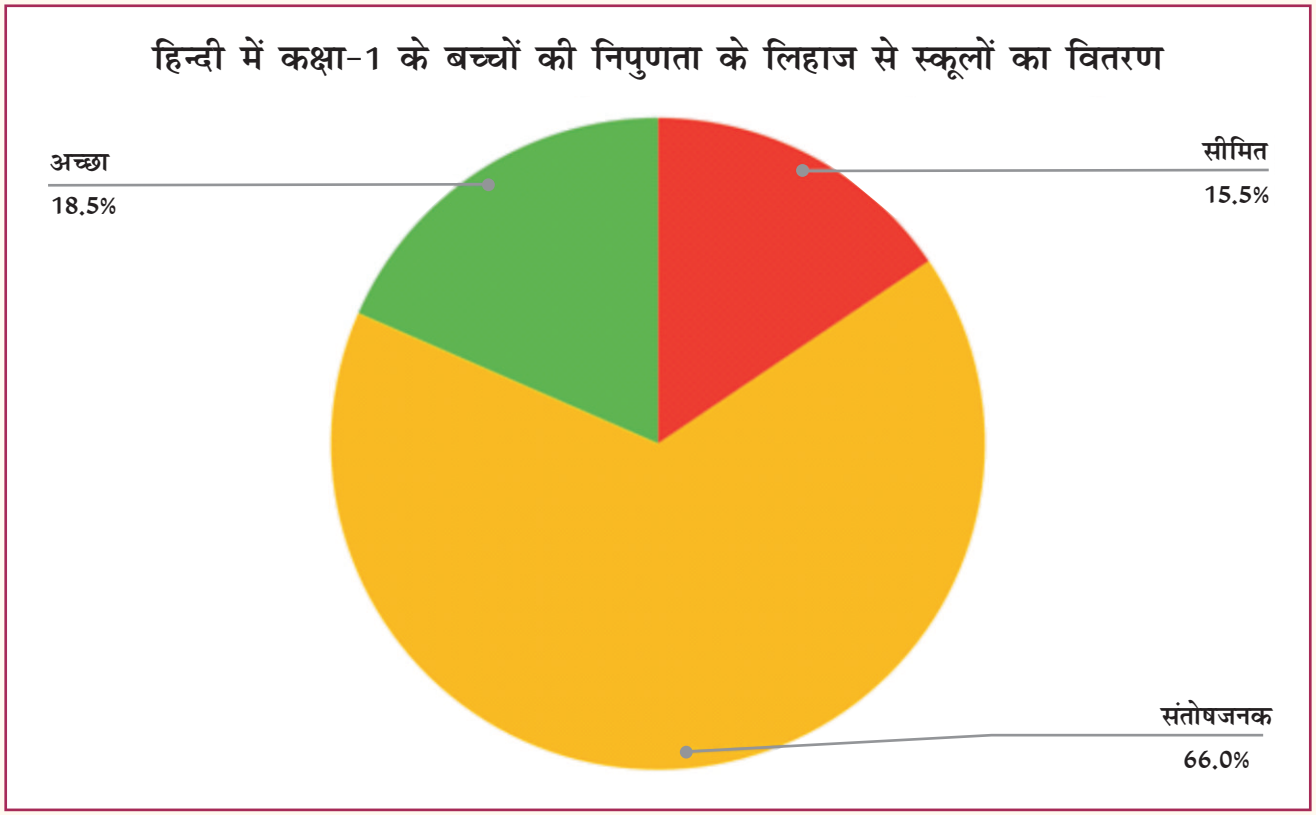

चित्र 4: हिन्दी में सीमित, संतोषजनक और अच्छी निपुणता वाले कक्षा-1 के बच्चों के अनुसार स्कूलों का वितरण

66 प्रतिशत स्कूलों में बच्चों को सीखने में मध्यम से गंभीर स्तर तक की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि शिक्षण के माध्यम यानी हिन्दी में उनके पास सिर्फ संतोषजनक निपुणता है।

15.5 प्रतिशत स्कूली बच्चे संभवत: सीखने की गंभीर कठिनाइयों का सामना करेंगे, क्योंकि शिक्षण के माध्यम यानी हिन्दी में उनकी निपुणता सीमित है।

इस तरह, कुल मिलाकर लगभग **81.5 प्रतिशत स्कूलों में बच्चे शिक्षण के माध्यम यानी हिन्दी भाषा पर अपनी पकड़ न होने की वजह से मध्यम से गंभीर स्तर तक की कठिनाइयों** का सामना करेंगे। पूरे छत्तीसगढ़ में इस किस्म के स्कूलों की संख्या **24,250** के आसपास बैठती है।

जब दाखिले के समय स्कूल की भाषा में बच्चों की निपुणता सीमित होती है तो जाहिर है कि जो कुछ उनको पढ़ाया जाएगा, उसको समझने में और किताबों में जो कुछ लिखा है, उसको समझने में उनको बहुत भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। यहाँ तक कि जिन बच्चों के पास स्कूल में दाखिले के समय स्कूल की भाषा में संतोषजनक क्षमता होती है, उनके लिए भी हालात आसान नहीं होते, क्योंकि अकादमिक अवधारणाओं को समझने, विश्लेषण या तुलना जैसे उच्चस्तरीय चिंतन कौशल का अभ्यास करने या अपनी बात को कक्षा में पूरी तरह कह पाने के लिए भाषा पर इतनी पकड़ भी काफी नहीं होती।

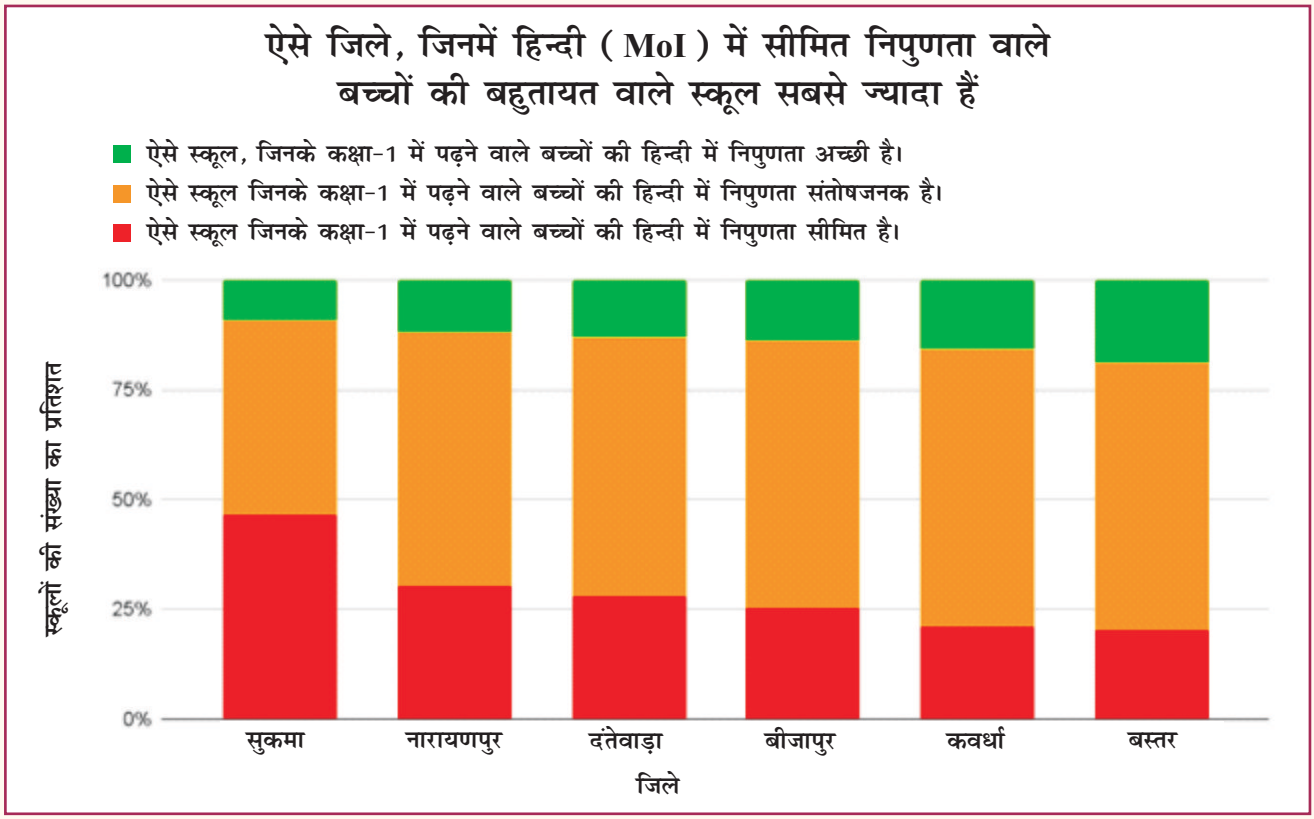

चित्र 5: हिन्दी में सीमित निपुणता वाले बच्चों की सबसे ज्यादा संख्या वाले स्कूलों का जिलेवार वितरण

चित्र 5 से पता चलता है कि सुकमा, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, कवर्धा और बस्तर जिलों में पहली कक्षा में दाखिला लेने वाले बच्चों में हिन्दी निपुणता का स्तर सबसे कमजोर दिखाई देता है। इस तथ्य का सबसे कम साक्षरता वाले जिलों के बारे में नीचे दिए गए आँकड़ों के साथ असाधारण सह-संबंध दिखाई देता है।

छत्तीसगढ़ में सबसे कम साक्षरता वाले जिले[11]

क्र.सं.	जिला	साक्षरता दर
1.	सुकमा	29 %
2.	बीजापुर	41.5 %
3.	दंतेवाड़ा	42.7 %
4.	नारायणपुर	49.5 %
5.	बस्तर	54.9 %
छत्तीसगढ़ में औसत साक्षरता दर : 71 प्रतिशत		

तालिका-2: छत्तीसगढ़ में सबसे कम साक्षरता दर वाले जिलों में साक्षरता का स्तर

राज्य के जिन जिलों में साक्षरता का स्तर सबसे कमजोर है और जिन जिलों में कक्षा-1 के बच्चों की हिन्दी में निपुणता सबसे कम है, उन जिलों के बीच दिखाई देने वाले इस असाधारण सह-संबंध से पता चलता है कि इन जिलों में भाषा व साक्षरता के स्तर पर जो पिछड़ापन दिखाई देता है, वह इसी वजह से है कि यहाँ बच्चों को एक ऐसी भाषा में पढ़ने के लिए बाध्य किया जाता है, जिसको वे जानते ही नहीं हैं।

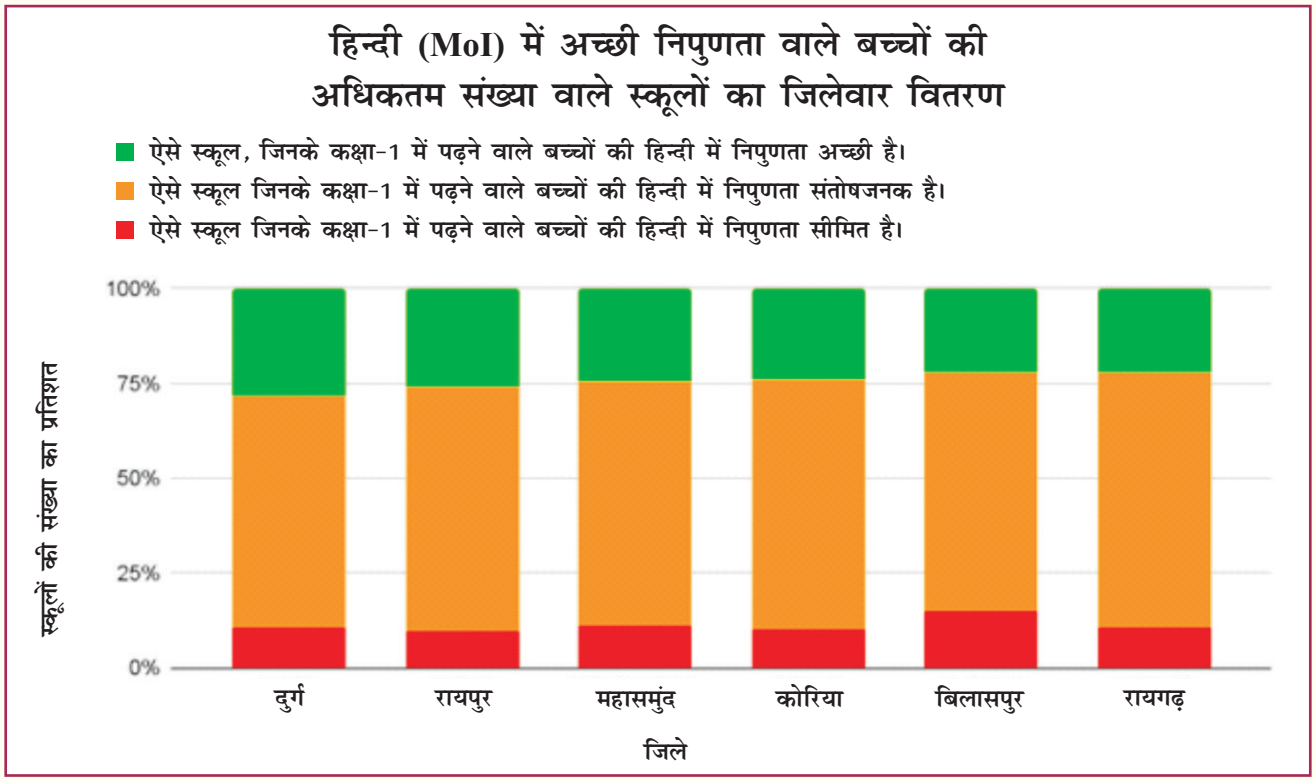

चित्र 6: हिन्दी में संतोषजनक और अच्छी निपुणता वाले बच्चों के स्कूलों की सबसे ज्यादा संख्या वाले जिले

[11] *यूडाइस, डिस्ट्रिक्ट रिपोर्ट कार्ड्स, 2016-2017, http://udise.in/drc2016-17.htm*

चित्र 6 में ऐसे जिलों के बारे में बताया गया है, जहाँ कक्षा–1 में हिन्दी में संतोषजनक या अच्छी निपुणता रखने वाले बच्चों की संख्या सबसे अधिक है। यहाँ भी आप आसानी से देख सकते हैं कि इन जिलों में भी बहुत थोड़े बच्चे – लगभग 25 प्रतिशत – ही ऐसे हैं, जिनके पास हिन्दी में अच्छी निपुणता है। बहुत बड़ी संख्या ऐसे बच्चों की है, जिनके पास केवल संतोषजनक निपुणता है, जबकि कुछ के पास सीमित निपुणता है। इसका मतलब ये निकलता है कि कक्षा–1 में हिन्दी का कुछ ज्ञान रखने वाले बच्चों के तुलनात्मक रूप से अधिक अनुपात वाले जिलों में भी यह संख्या इतनी अधिक नहीं है कि उसके आधार पर हिन्दी को शिक्षण के एकमात्र माध्यम के रूप में ठहराया जा सके।

4.2.1. हिन्दी में सीमित एवं संतोषजनक निपुणता वाले बच्चे – व्यापक स्थिति

स्कूल स्तरीय भाषायी मानचित्रण के आँकड़ों से पता चलता है कि छत्तीसगढ़ में कक्षा–1 में लगभग 15.5 प्रतिशत बच्चों के पास हिन्दी में केवल सीमित निपुणता है। लगभग 66 प्रतिशत बच्चों के पास हिन्दी में संतोषजनक निपुणता है।

यह मानने के ठोस कारण मौजूद हैं कि कक्षा–1 के बच्चों में हिन्दी में सीमित निपुणता वाले बच्चों की संख्या इससे बहुत ज्यादा है और संभव है कि स्कूल के स्तर पर किए गए सर्वेक्षण में उनकी कुशलता को बढ़ा–चढ़ाकर संतोषजनक कुशलता की श्रेणी में दर्ज किया गया हो। सर्वे सैम्पल में कक्षा–1 के 95 प्रतिशत बच्चों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है, इसलिए ऐसी संभावना कम ही दिखाई देती है कि इनमें से 66 प्रतिशत बच्चों के पास कक्षा–1 में दाखिले के समय हिन्दी में संतोषजनक निपुणता आ चुकी होगी। यह संभावित गलत आकलन सर्वे प्रश्नावली की बनावट से भी प्रभावित हो सकता है क्योंकि उसमें शिक्षकों को पूरी कक्षा के लिए हिन्दी निपुणता के मद में केवल एक औसत रेटिंग का ही विकल्प किया गया था।

रिपोर्ट के शेष भाग में की गई सारी गणनाओं में प्रारंभिक कक्षाओं में मध्यम से गंभीर स्तर तक की अधिगम कठिनाइयों का सामना करने वाले बच्चों की संख्या के अनुमान के लिए हमने ऐसे बच्चों की संख्या का योग किया है, जिनकी हिन्दी में निपुणता सीमित एवं संतोषजनक बताई गई है।

4.3. सीखने में मध्यम से गंभीर स्तर तक की कठिनाइयों का सामना करने वाले बच्चों के भाषा समूह

समूह 1: अनुसूचित जनजातियों के बच्चे, खासतौर से दुर्गम, आदिवासी बहुल इलाकों के बच्चे जो घर में अपनी देशज भाषा बोलते हैं।

समूह 2: अंतरराज्यीय सीमाओं पर रहने वाले बच्चे, जिनके आसपास ऐसे स्कूल पर्याप्त संख्या में नहीं है, जिनमें उनकी घर की भाषा में पढ़ाई होती हो या ऐसे बच्चे जो स्थायी रूप से अथवा मौसमी तौर पर किसी ऐसे राज्य से आए हैं, जहाँ की सरकारी भाषा कुछ और है।

समूह 3: ऐसे बच्चे, जो कोई ऐसी क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं, जिसे 'हिन्दी के अंतर्गत मातृभाषा समूह' की भाषा (जनगणना के आँकड़ों के अनुसार) माना जाता है और जो स्कूल में दाखिले के समय मानक हिन्दी को बहुत कम समझ पाते हैं।

'मेरे शैक्षणिक अनुभव के दौरान मैंने पाया कि कक्षा–1 के छात्र अपनी घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच अंतर के कारण अकादमिक रूप से संघर्ष करते हैं क्योंकि मेरी शाला के अधिकांश बच्चे धुरवीभाषी हैं। उन्हें घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच अंतर के कारण किताब की भाषा समझने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कक्षा–1 में जब बच्चे प्रवेश लेकर आते हैं, तब वे अपने घर की भाषा से जुड़े हुए होते हैं, उन्हें स्कूल की भाषा समझ नहीं आती है। कक्षा में बच्चे चुप रहते हैं। यदि कक्षा में मैं हिन्दी में बात करता हूँ तो बच्चे मौन रहते हैं।'

– श्री गोविंद राम नाग, शिक्षक, प्राथमिक शाला, जंगदपाल, छिंदगढ़, सुकमा

शिक्षकों और छात्रों के अनुभवों से इस बारे में स्पष्ट साक्ष्य मिल जाते हैं कि जब बच्चों की घर की भाषा स्कूल की भाषा से भिन्न होती है तो बच्चों, खासतौर से शुरुआती कक्षाओं के बच्चों को सीखने में कितने भारी नुकसान और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे ज्यादातर बच्चों के पास दाखिले के समय स्कूल की भाषा में बहुत सीमित निपुणता होती है और लिहाजा उन्हें न तो किताबें समझ में आती हैं और न ही वो समझ में आता है, जो शिक्षक समझा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में घर की भाषाओं के हिसाब से बच्चों के तीन ऐसे प्रमुख समूह दिखाई देते हैं, जो सीखने में मध्यम से गंभीर स्तर तक की कठिनाइयों से जूझ रहे हैं।

समूह 1: अनुसूचित जनजातियों (अजजा), खासतौर से दुर्गम जनजातीय बहुल इलाकों के ऐसे बच्चे, जो घर में अपनी देशज भाषा बोलते हैं

	स्कूलों की संख्या			
घर की भाषा	**50 प्रतिशत से कम बच्चे (कक्षा–1)**	**50–69 प्रतिशत बच्चे (कक्षा–1 में)**	**70–89 प्रतिशत बच्चे (कक्षा–1 में)**	**90 प्रतिशत से अधिक बच्चे (कक्षा–1 में)**
हल्बी	270	89	83	1450
गोंडी (दंतेवाड़ा)	107	64	48	912
गोंडी (बस्तर)	142	55	44	685
भतरी	32	16	18	323
गोंडी (कांकेर)	41	18	9	290
कुडुख	277	98	69	165
दोरली	26	21	9	117
मड़िया	21	3	5	93
बैगानी	18	11	15	92
धुरवी	30	16	7	77
कमारी	11	7	0	44

तालिका–3: आदिवासी भाषा बोलने वाले बच्चों की उपस्थिति वाले स्कूलों की संख्या

भाषायी सर्वेक्षण से पता चलता है कि कक्षा-1 (संख्या की दृष्टि से 49,060 और कक्षा-1 की छात्र आबादी का 11.86 प्रतिशत) में बहुत सारे बच्चे ऐसे हैं, जो हल्बी, गोंडी (दंतेवाड़ा/कांकेर/बस्तर), भतरी, कुडुख, दोरली, मड़िया, बैगानी, धुरवी एवं कमारी जैसी आदिवासी भाषाएँ बोलते हैं। ये भाषाएँ हिन्दी के मुकाबले बहुत भिन्न भाषा परिवारों से संबद्ध हैं। जब इन भाषाओं वाले बच्चे स्कूल में दाखिला लेते हैं तो आमतौर पर वे हिन्दी बहुत ही कम समझ पाते हैं। इस तरह, ये बच्चे घर की भाषा और स्कूली भाषा के फर्क की वजह से सीखने के मामले में बेहद नुकसानदेह स्थितियों से गुजरते हैं।

छत्तीसगढ़ में कक्षा-1 के लगभग 49000 (लगभग 11 प्रतिशत) बच्चे गोंडी, हल्बी, भतरी, कुडुख, दोरली, मड़िया, धुरवी, बैगानी और कमारी आदि आदिवासी भाषाएँ बोलते हैं। उन्हें स्कूल की भाषा यानी हिन्दी समझ में नहीं आती, इसलिए जो पढ़ाया जा रहा है, वह भी समझ में नहीं आता और लिहाजा वे सीखने में गंभीर नुकसान के शिकार होते हैं।

समूह 2 : अंतरराज्यीय सीमाओं पर रहने वाले बच्चे, जिनके आसपास ऐसे स्कूल पर्याप्त संख्या में नहीं हैं, जिनमें उनकी घर की भाषा में पढ़ाई होती हो या

ऐसे बच्चे, जो स्थायी रूप से अथवा मौसमी तौर पर किसी ऐसे राज्य से आए हैं, जहाँ की सरकारी भाषा कुछ और है।

	स्कूलों की संख्या			
घर की भाषा	50% से कम बच्चे (कक्षा-1)	50-69% बच्चे (कक्षा-1)	70-89% बच्चे (कक्षा-1)	90% से अधिक बच्चे कक्षा-1
ओडिया	247	84	71	482
बांग्ला	34	12	13	144
तेलुगू	32	8	4	106
मराठी	33	2	1	4

तालिका-4: ऐसे स्कूलों की संख्या, जिनमें प्रवासी या अंतरराज्यीय सीमा के आसपास रहने वाले बच्चे पढ़ते हैं और जो कोई भिन्न क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं

छत्तीसगढ़ कई राज्यों से जुड़ा हुआ है। इसकी पश्चिमी सीमा पर मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र है, उत्तर में उत्तर प्रदेश, दक्षिण में आंध्र प्रदेश व तेलंगाना, जबकि पूर्व में ओडिशा और झारखंड पड़ते हैं। इन पड़ोसी राज्यों में बोली जाने वाली ओडिया, मराठी और तेलुगू जैसी आधुनिक भारतीय भाषाओं को ऐसे बच्चों की घरेलू भाषा के रूप में जगह मिलती है, जो राज्य की सीमाओं के निकट पड़ने वाले इलाके में रहते हैं या जो बाहर से राज्य में आकर बसे हैं। छत्तीसगढ़ के आदिवासी इलाकों में मिलने वाली बांग्ला भाषी आबादी मुख्य रूप से बांग्लादेश अथवा भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान से आकर बसे शरणार्थी हैं।

छत्तीसगढ़ में कक्षा-1 के लगभग 10,000 बच्चे (लगभग 2 प्रतिशत) ऐसी भाषाएँ बोलते हैं, जिन्हें आधुनिक भारतीय भाषाओं की श्रेणी में रखा जाता है- ओडिया, बांग्ला, तेलुगू और मराठी। इन बच्चों के आसपास ऐसे स्कूल नहीं हैं, जहाँ इन भाषाओं में पढ़ाई होती हो।

ये सभी भाषाएँ भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल आधुनिक भारतीय भाषाएँ हैं और लिहाजा यह सुनिश्चित करना राज्य का दायित्व है कि जो बच्चे इन भाषाओं में पढ़ना चाहते हैं, उन्हें शिक्षकों और पाठ्यपुस्तकों सहित सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ।

समूह 3 : ऐसे बच्चे, जो कोई ऐसी क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं, जिसे 'हिन्दी के अंतर्गत मातृभाषा समूह' की भाषा (जनगणना के आँकड़ों के अनुसार)[12] माना जाता है और जो स्कूल में दाखिले के समय मानक हिन्दी को बहुत कम समझ पाते हैं

	स्कूलों की संख्या			
घर की भाषा	**50% से कम बच्चे (कक्षा-1)**	**50-69% बच्चे (कक्षा-1)**	**70-89% बच्चे (कक्षा-1)**	**90% से अधिक बच्चे कक्षा-1**
छत्तीसगढ़ी	713	418	400	16382
सरगुजिहा	218	153	136	2967
सादरी	180	138	120	1550
बघेली	24	4	4	98
भोजपुरी	10	1	1	14
सिंगरोलिया	2	2	4	12

तालिका 5: ऐसे बच्चों वाले स्कूलों की संख्या, जो कोई ऐसी भाषा बोलते हैं, जिसे हिन्दी के अंतर्गत मातृभाषा समूह की भाषा माना जाता है

छत्तीसगढ़ी, सरगुजिहा, सादरी, भोजपुरी, बघेली और सिंगरोलिया सहित ये सभी भाषाएँ, उसी हिन्द-आर्य भाषा परिवार से हैं, जिसमें हिन्दी आती है। फलस्वरूप इन भाषाओं में हिन्दी के साथ काफी समानताएँ हैं। यहाँ तक कि कई बार इन भाषाओं को हिन्दी की ही बोली मान लिया जाता है, मगर वास्तव में वे हिन्दी से पृथक भाषाएँ हैं। जब कक्षा-1 में दाखिला लेने वाला कोई बच्चा इनमें से किसी भाषा को अपनी मातृभाषा बताता है, तो इसका मतलब है कि हिन्दी पर उसकी पकड़ संभवत: केवल संतोषजनक ही होगी। ऐसे बच्चों को स्कूल और पाठ्यपुस्तकों में इस्तेमाल होने वाली अकादमिक हिन्दी को समझने में खासी परेशानियों का सामना करना पड़ता होगा। ये ऐसे बच्चे भी हो सकते हैं, जिनकी मातृभाषा भी इन्हीं में से कोई भाषा है और दाखिले के समय हिन्दी में उनकी पकड़ सीमित होगी।

छत्तीसगढ़ में लगभग 80% बच्चे (3,29,000 बच्चे) ऐसी भाषाएँ बोलते हैं, जिन्हें 'हिन्दी के अंतर्गत मातृभाषा समूह' की भाषा माना जाता है, (इनमें से कुछ को 2001 की भाषायी गणना में हिन्दी मातृभाषा के अंतर्गत समूहबद्ध किया गया है)। जैसे- छत्तीसगढ़ी, सरगुजिहा और सादरी।

[12] *https://web.archive.org/web/20080201193939/http://www.censusindia.gov.in/Census_Data_2001/Census_Data_Online/Language/Statement1.htm*

कुल मिलाकर, प्रत्येक समूह में मध्यम से गंभीर स्तर तक के भाषायी कठिनाइयों का सामना करने वाले बच्चों की संख्या इस प्रकार है :

समूह	विवरण	इस समूह में आने वाले बच्चों की संख्या
समूह-1	अनुसूचित जनजातियों के बच्चे, खासतौर से दुर्गम, आदिवासी बहुल इलाकों के बच्चे, जो घर में अपनी देशज भाषा बोलते हैं।	5,928
समूह-2	अंतरराज्यीय सीमाओं पर रहने वाले बच्चे, जिनके आसपास ऐसे स्कूल पर्याप्त संख्या में नहीं है, जिनमें उनकी घर की भाषा में पढ़ाई होती हो या ऐसे बच्चे, जो स्थायी रूप से अथवा मौसमी तौर पर किसी ऐसे राज्य से आए हैं, जहाँ की सरकारी भाषा कुछ और है।	1,277
समूह-3	ऐसे बच्चे, जो कोई ऐसी क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं, जिसे 'हिन्दी के अंतर्गत मातृभाषा समूह' की भाषा (जनगणना के आँकड़ों के अनुसार) माना जाता है और जो स्कूल में दाखिले के समय मानक हिन्दी को बहुत कम समझ पाते हैं।	23,551
	कुल योग	**30,756**

तालिका 6: समूह 1, समूह 2 और समूह 3 में मध्यम से गंभीर स्तर तक की भाषायी कठिनाई से जूझने वाले बच्चों का वितरण

4.4. शिक्षकों की भाषायी निपुणता

4.4.1 बच्चों की घर की भाषा में शिक्षकों की निपुणता
4.4.2 हिन्दी में शिक्षकों की निपुणता

''मुझे गोंडी भाषा नहीं आती है, जिसके कारण कक्षा शिक्षण में परेशानी होती है। बच्चे हिन्दी नहीं समझते हैं, शिक्षण हेतु बड़ी कक्षाओं के बच्चों की मदद लेनी पड़ती है। शाला में एक ही शिक्षक होने के कारण शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। घर की भाषा की कमी को दूर करने के लिए बच्चों की भाषा में पाठ्यसामग्री का निर्माण किया जाए तथा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए।''

– श्री गोवर्धन साहू, सहायक शिक्षक, प्राइमरी स्कूल, गन्जेनर, छिंदगढ़, सुकमा

4.4.1. बच्चों की घर की भाषा में शिक्षकों की निपुणता

एक बहुभाषी संदर्भ में सार्थक और प्रभावी शिक्षा प्रदान करने के लिए अपनी कक्षा के बच्चों की घर की भाषाओं में शिक्षकों की निपुणता बहुत महत्वपूर्ण कारक होती है। भाषायी सर्वेक्षण से पता चलता है कि 95% से अधिक बच्चों की मातृभाषा हिन्दी से भिन्न है, जिसकी वजह से ये जरूरी हो जाता है कि शिक्षक हिन्दी के अलावा बच्चों की कम से कम कोई एक भाषा जरूर बोलते हों।

जिला	जिले में सबसे प्रचलित घर की भाषा (HL) का नाम (HL1)	ऐसे स्कूलों की संख्या, जहाँ HL ही HL1 है	ऐसे शिक्षक, जिन्होंने बताया कि HL1 को बोलने में उनकी निपुणता सीमित है	ऐसे शिक्षकों की संख्या, जिन्होंने बताया कि HL1 को बोलने में उनकी निपुणता केवल संतोषजनक है
बालोद	छत्तीसगढ़ी	802	14	286
बलौदाबाजार	छत्तीसगढ़ी	1146	8	279
बलरामपुर	सादरी	540	28	223
बस्तर	हल्बी	724	52	275
बेमेतारा	छत्तीसगढ़ी	718	10	256
बीजापुर	गोंडी (दंतेवाड़ा)	221	54	107
बिलासपुर	छत्तीसगढ़ी	980	28	211
दंतेवाड़ा	गोंडी (दंतेवाड़ा)	458	158	227
धमतरी	छत्तीसगढ़ी	843	17	271
दुर्ग	छत्तीसगढ़ी	542	11	125
गरियाबंद	छत्तीसगढ़ी	657	7	226
गौरेला पेंड्रा मरवाही	छत्तीसगढ़ी	316	18	163
जांजगीर-चांपा	छत्तीसगढ़ी	1412	33	400
जशपुर	सादरी	1211	60	468
कांकेर	छत्तीसगढ़ी	1084	37	399
कवर्धा	छत्तीसगढ़ी	847	21	327
कोंडागाँव	हल्बी	592	59	285
कोरबा	छत्तीसगढ़ी	1413	35	406
कोरिया	सरगुजिहा	562	36	266
महासमुंद	छत्तीसगढ़ी	1027	27	288
मुंगेली	छत्तीसगढ़ी	606	3	204
नारायणपुर	गोंडी (बस्तर)	154	49	67
रायगढ़	छत्तीसगढ़ी	1695	34	550
रायपुर	छत्तीसगढ़ी	672	8	150
राजनांदगाँव	छत्तीसगढ़ी	1737	33	623
सुकमा	गोंडी (दंतेवाड़ा)	334	135	108
सूरजपुर	सरगुजिहा	1130	55	396
सरगुजा	सरगुजिहा	1083	50	412

टेबल 7 : बच्चों की घर की भाषाओं में शिक्षकों की निपुणता का जिलेवार ब्यौरा

स्कूल स्तरीय भाषायी सर्वेक्षण में शिक्षकों से कहा गया था कि वे बच्चों की भाषाओं में अपनी निपुणता को भी रेटिंग दें। शिक्षकों ने बच्चों की जिन भाषाओं में सबसे सीमित निपुणता का उल्लेख किया, वे आदिवासी भाषाएँ तथा सीमावर्ती इलाकों में बोली जाने वाली आधुनिक भारतीय भाषाएँ अथवा प्रवासी आबादी के बच्चों की भाषाएँ थीं। छत्तीसगढ़ी, सरगुजिहा और सादरी जैसी भाषाओं में शिक्षकों की निपुणता काफी बेहतर दिखाई देती है क्योंकि ज्यादातर शिक्षकों ने बताया कि इनमें उनकी निपुणता संतोषजनक या अच्छी है।

भाषायी सर्वेक्षण के आँकड़ों से पता चलता है कि लगभग 2,700 शिक्षकों (लगभग 9%) के पास अपनी कक्षा के बच्चों द्वारा बोली जाने वाली एक या अधिक भाषाओं में सीमित निपुणता है। इसके मुकाबले में ऐसे शिक्षकों की संख्या तीन गुना ज्यादा यानी 27% थी, जो विभिन्न आदिवासी समुदायों के बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं को बोलने या समझने में सक्षम हैं। यानी 27% शिक्षक बच्चों की आदिवासी भाषाओं में सीमित निपुणता रखते हैं।

छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में बच्चों को आधारभूत भाषायी एवं साक्षरता शिक्षा प्रदान करने के लिए ये बहुत जरूरी है कि शिक्षकों के पास बच्चों की भाषाओं में कम से कम संतोषजनक और आदर्शतः अच्छी पकड़ होनी चाहिए क्योंकि यहाँ 95% बच्चों की मातृभाषा हिन्दी से अलग है।

इस स्थिति से निपटने के लिए ऐसे कुछ कदम उठाए जा सकते हैं:

- बच्चों की भाषाओं और शिक्षकों की भाषायी निपुणता में समन्वय बिठाने के लिए शिक्षकों को उन इलाकों में तैनात किया जाए, जहाँ की भाषाएँ वे समझते हैं।
- शिक्षकों को बच्चों की भाषाएँ सिखाई जाएँ।

जब बच्चों की भाषाओं में सीमित निपुणता वाले सभी शिक्षकों से पूछा गया कि क्या वे इन भाषाओं को सीखने के इच्छुक हैं तो लगभग 88% शिक्षकों ने कहा कि वे इन भाषाओं को सीखना चाहते हैं।

जब बच्चों की कुछ भाषाओं में संतोषजनक या अच्छी निपुणता रखने वाले शिक्षकों से पूछा गया कि क्या वे ऐसे अन्य शिक्षकों को भाषा सिखा सकते हैं, जिनके पास इन भाषाओं में निपुणता नहीं है तो 89% शिक्षकों ने कहा कि वे अपने साथी शिक्षकों को सिखाने के लिए तैयार हैं। यह इस बात का संकेत है कि शिक्षकों के बीच साथी शिक्षा/पीयर टीचिंग की संभावनाओं की और पड़ताल की जानी चाहिए।

4.4.2. हिन्दी में शिक्षकों की निपुणता

शिक्षकों से हिन्दी में भी अपनी निपुणता के बारे में पूछा गया।

हिन्दी में सीमित निपुणता वाले शिक्षकों का प्रतिशत (%)	हिन्दी में संतोषजनक निपुणता वाले शिक्षकों का प्रतिशत (%)	हिन्दी में अच्छी निपुणता वाले शिक्षकों का प्रतिशत (%)
5.8	41.3	52.2

तालिका 8: हिन्दी में शिक्षकों की निपुणता

यह समझने के लिए इन आँकड़ों का और अध्ययन किया जाना चाहिए कि लगभग 47% शिक्षकों को ऐसा क्यों लगता है कि शिक्षण के माध्यम हिन्दी में उनके पास अच्छी निपुणता नहीं है, जबकि यही उनकी पढ़ाई का माध्यम है और उन्हें कक्षा में हिन्दी में ही पढ़ाना होता है। हिन्दी में ऐसे शिक्षकों की निपुणता बढ़ाने के लिए सघन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए।

4.5. स्कूलों की सामाजिक-भाषायी प्रकार

4.5.1. प्रकार I स्कूल : बच्चों को सीखने में कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता।

4.5.2. प्रकार II स्कूल :

4.5.3. प्रकार III स्कूल : बच्चों को सीखने में मध्यम से गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है

4.5.5. प्रकार IV स्कूल : बच्चों को सीखने में जटिल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है

विभिन्न भाषायी स्थितियों के लिए उचित रणनीतियाँ विकसित करने के लिए प्रत्येक स्कूल की स्थितियों का विश्लेषण करना बहुत जरूरी है। इस तरह के विश्लेषण की मदद से ऐसी रणनीतियाँ तैयार की जा सकती हैं, जो अलग-अलग प्रकार की स्कूली स्थितियों के अनुसार बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक, भाषायी एवं संज्ञानात्मक विकास के लिए उपयुक्त हो सकती हैं।

स्कूलों को सामाजिक-भाषायी प्रकारों के अनुसार समूहबद्ध करने की पद्धति डॉ. धीर झिंगरन ने विकसित की है। स्कूलों को सामाजिक-भाषायी प्रकारों में बाँटने के लिए जिन कसौटियों का इस्तेमाल किया जाता है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- **कक्षा-1 में दाखिले के समय बच्चे कौन-सी भाषाएँ जानते हैं:** इसमें बच्चे की घर की भाषाएँ/प्रथम भाषाएँ (L1) भी शामिल हैं और (L2) तथा स्कूल के बाहर प्रचलित अन्य भाषाओं के साथ उनका परिचय भी शामिल है।
- **कक्षा का संयोजन:** क्या सभी अथवा ज्यादातर बच्चों की भाषा एक ही दिखाई पड़ती है और यदि बच्चे अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं तो क्या उनके बीच कोई संपर्क भाषा (लिंग्वा फ्रांका) है, जिसे ज्यादातर बच्चे समझते हैं।
- **(L1) और (L2) के आपसी संबंध:** क्या दोनों भाषाएँ एक ही भाषा परिवार की हैं? क्या वे एक-दूसरे से काफी समान हैं या भिन्न हैं? क्या सांस्कृतिक अथवा सामाजिक-राजनीतिक कारकों के आधार पर इन भाषाओं के बीच एक सोपानिक संबंध दिखाई देता है?
- **शिक्षण का माध्यम:** पाठ्यपुस्तकों और व्यापक पाठ्यचर्या में इस्तेमाल होने वाली मानक भाषा।
- **पढ़ाने के लिए वास्तव में किस भाषा का इस्तेमाल होता है:** कुछ कक्षाओं में (L2) का सख्ती से इस्तेमाल किया जाता है, कुछ कक्षाओं में (L1) और (L2) दोनों का लचीले ढंग से इस्तेमाल किया जाता है या कुछ कक्षाओं में मुख्य रूप से (L1) का इस्तेमाल होता है, जिसमें (L2) की ज्यादातर सामग्री का भी (L1) में ही अनुवाद करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।
- **बच्चों की (L1) भाषा में अध्यापक की निपुणता और अल्पसंख्यक/गैर-प्रभुत्वशाली (L1) भाषाओं के प्रति उनका रवैया:** शिक्षक (L1) भाषाओं को कितनी अच्छी तरह बोल या समझ पाते हैं और कक्षा में पढ़ाते हुए वे बच्चों की (L1) भाषा को समाहित करने के प्रति कितना खुलापन दिखाते हैं।

इन कारकों के आधार पर अलग-अलग भाषायी परिस्थितियों के जो विवरण तय किए गए हैं, वे इस प्रकार हैं:

प्रकार	विवरण
प्रकार-I	• ज्यादातर बच्चे किसी ऐसी भाषा में बात करते हैं, जो स्कूल की भाषा से मिलती-जुलती है। • शिक्षक उस भाषा को समझता/समझती है।
प्रकार-II	• कक्षा-1 में दाखिले के समय ज्यादातर बच्चों की शिक्षण के माध्यम की सीमित समझ होती है या कोई समझ नहीं होती है। • लगभग सभी बच्चों (90 प्रतिशत से अधिक) की घर की भाषा एक ही है। • शिक्षक बच्चों की घर की भाषा को समझते/बोलते हैं।

प्रकार-III	• कक्षा-1 में दाखिले के समय ज्यादातर बच्चों की शिक्षण के माध्यम की सीमित समझ होती है या कोई समझ नहीं होती है। • लगभग सभी बच्चों (90 प्रतिशत से अधिक) की घर की भाषा समान है। • शिक्षक बच्चों की घर की भाषा समझते/बोलते नहीं हैं।
प्रकार-IVa	• कक्षा-1 में दाखिले के समय ज्यादातर बच्चों की शिक्षण के माध्यम की सीमित समझ होती है या कोई समझ नहीं होती है। • बच्चे दो या अधिक भाषायी समूहों से आते हैं। • कक्षा में एक संपर्क भाषा मौजूद है (बच्चों की भाषाओं में से ही कोई एक भाषा) और ज्यादातर बच्चे (90 प्रतिशत से अधिक) उस संपर्क भाषा को समझते या बोलते हैं।
प्रकार-IVb	• कक्षा-1 में दाखिले के समय ज्यादातर बच्चों की शिक्षण के माध्यम की सीमित समझ होती है या कोई समझ नहीं होती है। • बच्चे एक या अधिक भाषायी समूहों से आते हैं। • कक्षा में कोई संपर्क भाषा नहीं है, यदि है तो ज्यादातर बच्चे (90 प्रतिशत से अधिक) उस संपर्क भाषा समझते/बोलते नहीं हैं।

छत्तीसगढ़ के तमाम स्कूलों के भाषायी सर्वेक्षण के नतीजों से पता चलता है कि उपरोक्त सामाजिक-भाषायी प्रकारों में आने वाले अलग-अलग किस्म के स्कूलों की संख्या कितनी है।

भाषा स्थितियों के प्रकार	स्कूलों की संख्या	
प्रकार I	5,976 (20%)	
प्रकार II	19,768 (66.4%)	
प्रकार III	1,299 (4.3%)	
प्रकार IVa	1363 (4.5%)	1,311 (4.4%) (शिक्षकों के पास संपर्क भाषा में संतोषजनक/अच्छी निपुणता है)
		52 (0.1%) (शिक्षकों के पास संपर्क भाषा में सीमित निपुणता है)
प्रकार IVb	135 (0.4%) (बच्चों के पास संपर्क भाषा में सीमित निपुणता है)	

तालिका 9: अलग-अलग सामाजिक-भाषायी प्रकारों में आने वाले स्कूलों की संख्या (और प्रतिशत)

'प्रकार I' स्कूल ऐसे स्कूल हैं, जहाँ बच्चे घर की ऐसी भाषा बोलते हैं, जो शिक्षण के माध्यम से मिलती-जुलती है। लिहाजा वे उसमें अच्छी-खासी निपुणता रखते हैं। ये ऐसे स्कूल हैं, जहाँ भाषायी कठिनाइयाँ अन्य प्रकार के स्कूलों की तुलना में कम होते हैं।

छत्तीसगढ़ में सबसे बड़ी संख्या 'प्रकार II' के ऐसे स्कूलों की है, जहाँ 90% से ज्यादा बच्चे एक जैसी घर की भाषा बोलते हैं, जिसमें बच्चों के पास हिन्दी में सीमित (या संतोषजनक) निपुणता है और जहाँ शिक्षक कक्षा में अधिकांश बच्चों द्वारा बोली जाने वाली घर की भाषा को बोलना जानते हैं।

'प्रकार III' के स्कूल वे स्कूल हैं, जहाँ 90% से अधिक बच्चे एक ही घर की भाषा बोलते हैं, जहाँ बच्चों के पास हिन्दी में सीमित (या संतोषजनक) निपुणता है, मगर शिक्षक बच्चों की घर की भाषा नहीं बोल पाते। ये बच्चे सबसे ज्यादा नुकसानदेह स्थिति में होते हैं क्योंकि शिक्षक–छात्रों के भाषायी फासले की वजह से प्रारंभिक कक्षाओं में उनके बीच संवाद बुरी तरह बाधित हो जाता है। एक अनजान माध्यम भाषा में सीखने की मजबूरी की वजह से बच्चे बेहद नुकसानदेह स्थिति में रहते हैं।

'प्रकार IV' के स्कूल ऐसे स्कूल हैं, जहाँ कक्षा में दो से अधिक घर की भाषाएँ हैं और बच्चों के पास हिन्दी में सीमित (या संतोषजनक) निपुणता है। ऐसी कक्षाओं को पढ़ाना तुलनात्मक रूप से ज्यादा कठिन होता है क्योंकि शिक्षक को एक साथ कई घर की भाषाओं के बच्चों से बात करनी होती है और सभी बच्चों के बीच आपसी संवाद की कोई भाषा हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है।

नीचे दिए गए हिस्सों में इन सभी प्रकार के स्कूलों के विषय में भाषायी सर्वेक्षण से मिली सूचनाओं को संकलित किया गया है–

4.5.1. प्रकार I के स्कूल

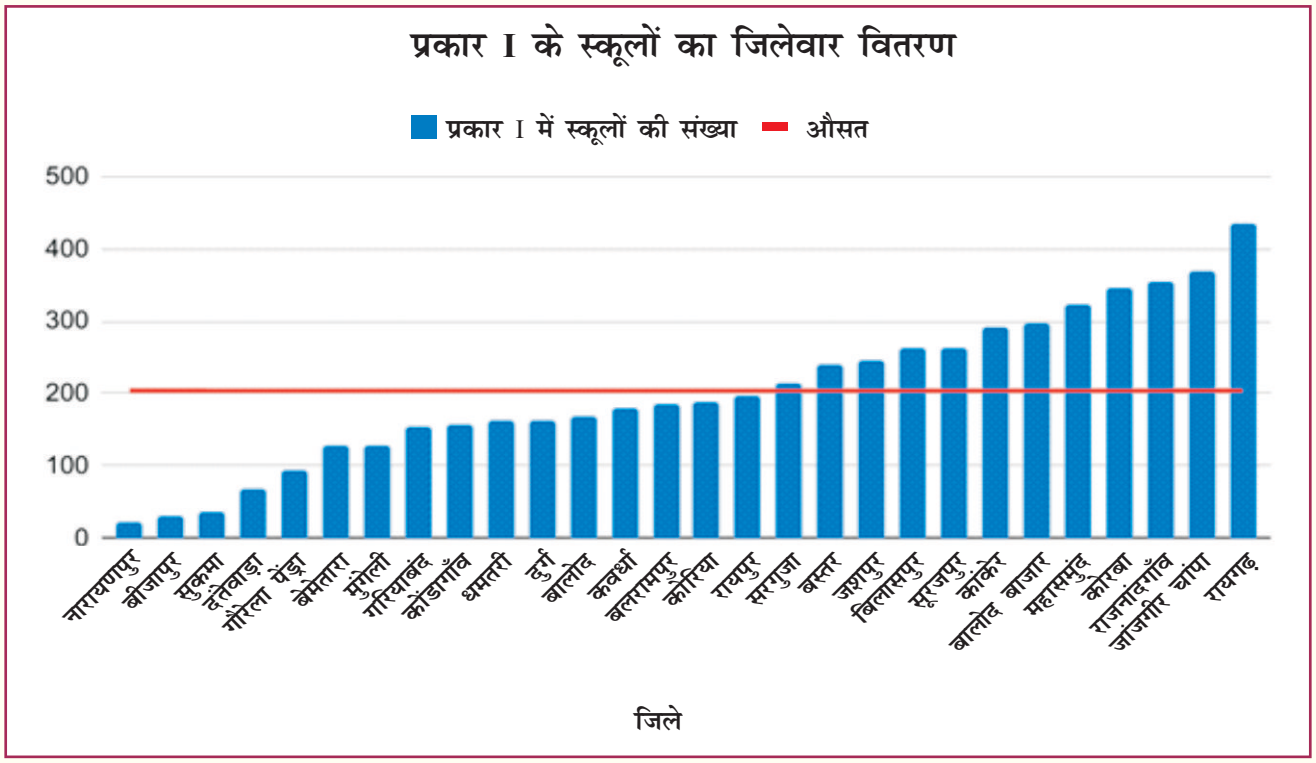

चित्र 7: प्रकार I के स्कूलों का जिलेवार वितरण[13]

प्रकार I के स्कूल ऐसे स्कूल हैं, जहाँ के बच्चे कोई ऐसी क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं, जिसकी स्कूल की भाषा के साथ कुछ समानता है और इसके चलते स्कूल की भाषा पर भी उनकी अच्छी पकड़ है। ये ऐसे स्कूल हैं, जहाँ के बच्चों के सामने भाषा की दृष्टि से नुकसानदेह स्थिति की संभावना नहीं है।

[13] *प्रकार I, प्रकार II, प्रकार III और प्रकार IV के स्कूलों की जिलेवार संख्या की पूरी तालिका परिशिष्टों में दी गई है।*

भाषायी सर्वेक्षण के नतीजों से पता चलता है कि छत्तीसगढ़ के लगभग 20% स्कूलों के बच्चों के सामने भाषा की दृष्टि से नुकसानदेह स्थिति की संभावना कम है। सामाजिक-भाषायी प्रकारों में ये स्कूल प्रकार I में आते हैं।

प्रकार I के औसत से अधिक स्कूलों वाले जिले इस प्रकार हैं: रायगढ़, जांजगीर चांपा, राजनांदगाँव, कोरबा, महासमुंद, बलौदाबाजार, कांकेर, सूरजपुर, बिलासपुर, जशपुर और सरगुजा। प्रकार I स्कूलों की औसत से कम संख्या वाले जिले इस प्रकार हैं: नारायणपुर, बीजापुर, सुकमा, दंतेवाड़ा, गौरेला पेंड्रा मरवाही, बेमेतारा, मुंगेरी, गरियाबंद, कोंडागाँव, धमतरी, दुर्ग, बालोद, कवर्धा, बलरामपुर, कोरिया और रायपुर। प्रकार I स्कूलों की कम संख्या का मतलब है कि इन जिलों में ऐसे स्कूल बहुत कम हैं, जहाँ बच्चों को भाषा की दृष्टि से नुकसानदेह स्थिति का सामना बहुत कम करना पड़ता है।

4.5.2. प्रकार II के स्कूल

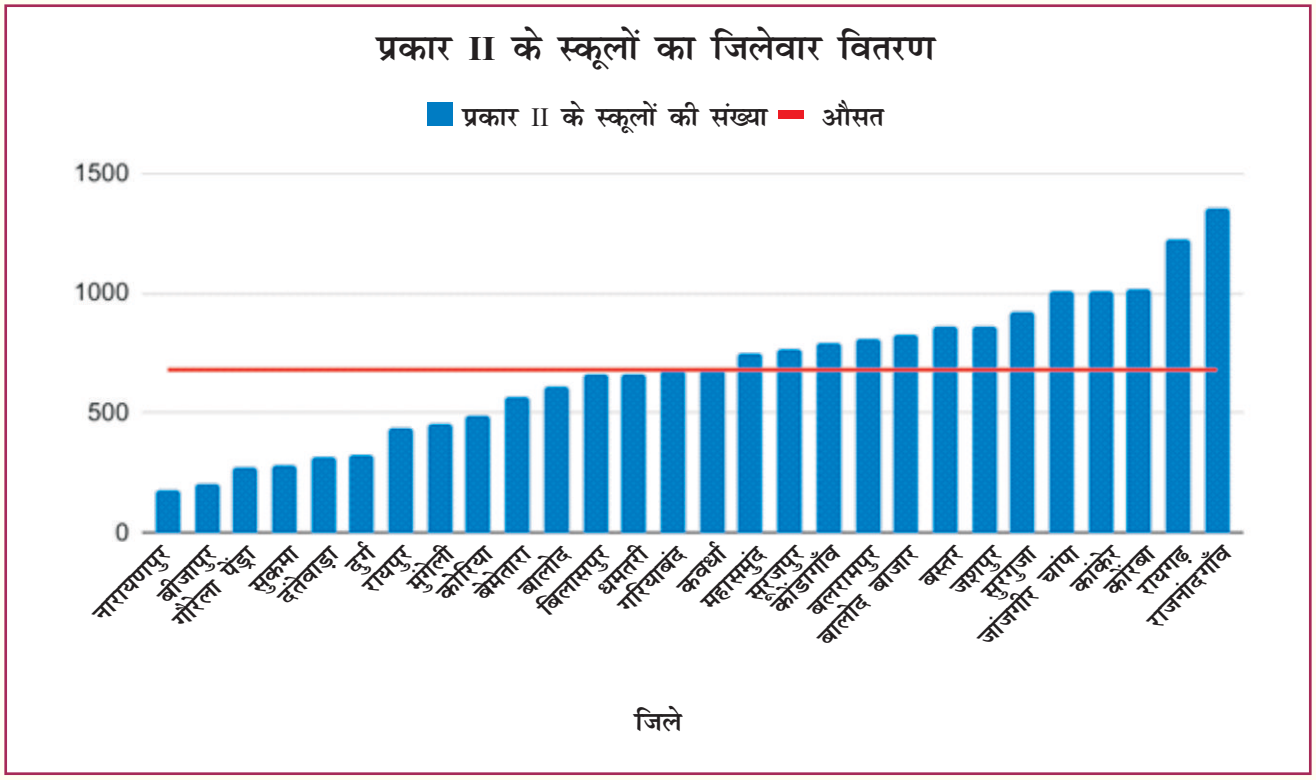

चित्र 8: प्रकार II के स्कूलों का जिलेवार वितरण

प्रकार II के स्कूल ऐसे स्कूल हैं, जहाँ 90% से ज्यादा बच्चों की घर की भाषा समान है, जहाँ ज्यादातर बच्चों की हिन्दी में निपुणता सीमित (या संतोषजनक) है और जहाँ शिक्षक बच्चों की भाषा बोलते हैं।

छत्तीसगढ़ में प्रकार II स्कूलों की संख्या 19,768 है (66%)। जब इन स्कूलों (90% से अधिक) को ज्यादातर बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषा की किस्म के आधार पर उपश्रेणियों में विभाजित किया जाता है तो पता चलता है कि 15,732 स्कूलों के बच्चे ऐसी भाषाएँ बोलते हैं, जो हिन्दी के अंतर्गत समूहबद्ध मातृभाषा की श्रेणी में आती हैं (जैसे- छत्तीसगढ़ी या सरगुजिहा), 2,888 स्कूलों के बच्चे कोई आदिवासी भाषा बोलते हैं (जैसे- कुडुख या गोंडी) और 504 स्कूलों के बच्चे कोई ऐसी आधुनिक भारतीय भाषा बोलते हैं, जो किसी सीमावर्ती राज्य की क्षेत्रीय भाषा भी है (जैसे- ओडिया या बांग्ला)।

क्र. सं.	घर की भाषा	स्कूलों की संख्या
1.	छत्तीसगढ़ी	12211
2.	सरगुजिहा	2247
3.	सादरी	1202
4.	हल्बी	1075
5.	गोंडी (दंतेवाड़ा)	590
6.	गोडी (बस्तर)	218
7.	ओडिया	47
8.	भतरी	13
9.	गोंडी (कांकेर)	78
10.	बांग्ला	12

तालिका 10: जहाँ 90% से ज्यादा बच्चे एक जैसी घर की भाषा में बात करते हैं और शिक्षक भी बच्चों की भाषा में बात करना जानते हैं। ऐसे प्रकार II स्कूलों में बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ

क्र. सं.	जिला	स्कूलों की संख्या
1.	राजनांदगाँव	1353
2.	रायगढ़	1225
3.	कोरबा	1014
4.	कांकेर	1013
5.	जांजगीर चांपा	1005
6.	सरगुजा	921
7.	जशपुर	866
8.	बस्तर	861
9.	बलौदाबाजार	825
10.	बलरामपुर	811

तालिका 11: प्रकार II के स्कूलों की सबसे अधिक संख्या वाले जिले

तालिका 10 में छत्तीसगढ़ के प्रकार II स्कूलों में 10 सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं का ब्यौरा दिया गया है। इन आँकड़ों से पता चलता है कि 87% से अधिक (यानी कुल 17,325) स्कूलों में कक्षा 1 के 90% से ज्यादा बच्चे छत्तीसगढ़ी, सरगुजिहा, सादरी, हल्बी या गोंडी में से किसी एक भाषा में बात करते हैं। इन स्कूलों में बच्चों को कक्षा के भीतर इन भाषाओं के इस्तेमाल की छूट दी जानी चाहिए और उन्हें हिन्दी से धीरे-धीरे परिचित कराया जाना चाहिए। ऐसे स्कूलों में किस तरह की बहुभाषी शिक्षा पद्धति अपनाई जा सकती है, इसके बारे में रिपोर्ट के भाग 5 में विस्तृत सिफारिशें दी गई हैं।

तालिका 11 में ऐसे जिलों के बारे में बताया गया है, जहाँ प्रकार II में आने वाले सबसे ज्यादा स्कूल हैं। ये छत्तीसगढ़ के मध्य में पड़ने वाले राजनांदगाँव, रायगढ़, कोरबा, कांकेर और जांजगीर चांपा जिले हैं। जब आप प्रकार II के स्कूलों के सबसे ज्यादा प्रतिशत वाले जिलों को देखते हैं तो बेमेतरा, धमतरी, बालोद, सूरजपुर और राजनांदगाँव को अवरोही क्रम में रखा जा सकता है। इन सारे जिलों में 70 से 80% स्कूल ऐसे हैं, जिनके 90% से ज्यादा बच्चे एक ही भाषा में बात करते हैं। मगर, लगभग सारे जिलों में सबसे ज्यादा मिलने वाले स्कूल प्रकार II के ही स्कूल हैं।

चूँकि इन स्कूलों के बच्चों के पास स्कूल में दाखिले के समय हिन्दी पर अच्छी पकड़ नहीं होती, इसलिए स्कूल में बच्चों की घर की भाषा को व्यवस्थित और औपचारिक ढंग से इस्तेमाल करना जरूरी है। प्रकार II के स्कूलों में शिक्षक भी बच्चों की घर की भाषा में बात करना जानते हैं, इसलिए पढ़ाने की प्रक्रिया में वे बच्चों की भाषा का इस्तेमाल कर सकते हैं। मगर द्विभाषी शिक्षा कार्यक्रम का स्वरूप तय करने के लिए नीति निर्धारण की एक व्यवस्थित प्रक्रिया चलाई जानी चहिए। इससे शिक्षण के माध्यम, पाठ्यचर्या सामग्री की भाषा, L1 और L2 में पढ़ाई के वर्ष/अवधि और L1 व L2 के लिए उपयुक्त शिक्षाशास्त्र आदि के बारे में फैसला लिया जा सकेगा। प्रकार II स्कूलों में कौन-सी पद्धति अपनाई जाए, इस बारे में रिपोर्ट के भाग 5 में विस्तृत चर्चा की गई है।

4.5.3. प्रकार III के स्कूलों का जिलेवार वितरण

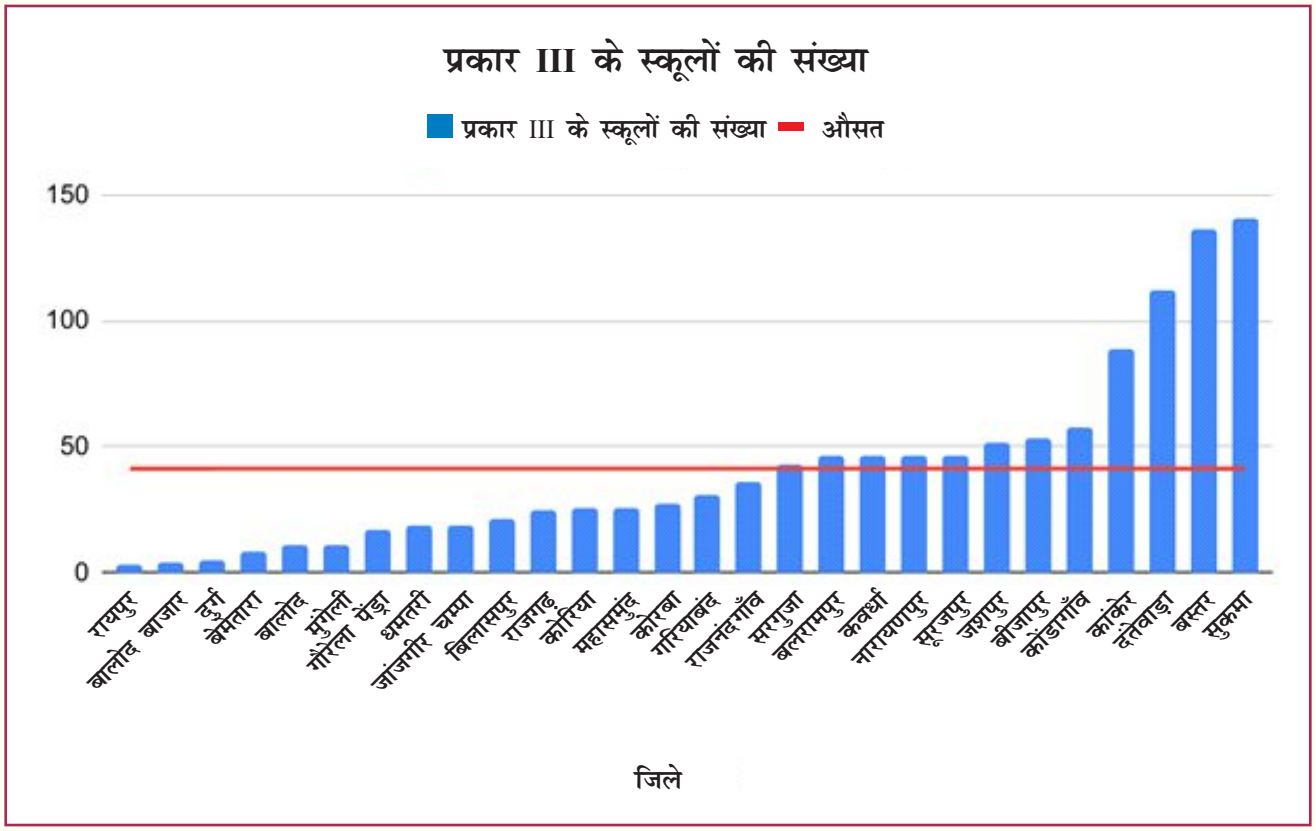

चित्र 9: प्रकार III स्कूलों का जिलावार वितरण

प्रकार III के स्कूल ऐसे स्कूल हैं, जहाँ 90% से ज्यादा बच्चों की भाषा समान है, जहाँ ज्यादातर बच्चों के पास हिन्दी में सीमित (या संतोषजनक) निपुणता है और अध्यापक बच्चों की भाषा में बात करना नहीं जानते।

छत्तीसगढ़ में प्रकार III में 1,299 (लगभग 4%) स्कूल आते हैं। जब ज्यादातर बच्चों की भाषा की श्रेणी के आधार पर इन स्कूलों को उपश्रेणियों में बाँटा जाता है तो पता चलता है कि यहाँ 748 स्कूलों के बच्चे किसी आदिवासी भाषा में बात करते हैं (जैसे- कुडुख या गोंडी), 412 स्कूलों के बच्चे हिन्दी के अंतर्गत समूहबद्ध मातृभाषा (जैसे- छत्तीसगढ़ी या सरगुजिहा) में बात करते हैं और 76 स्कूलों के बच्चे किसी ऐसी आधुनिक भारतीय भाषा में बात करते हैं जोकि किसी सीमावर्ती राज्य की क्षेत्रीय भाषा है (जैसे- ओडिया या बांग्ला)।

क्र. सं.	घर की भाषा	स्कूलों की संख्या
1.	गोंडी (दंतेवाड़ा)	251
2.	छत्तीसगढ़ी	245
3.	गोंडी (बस्तर)	218
4.	सरगुजिहा	107
5.	गोंडी (कांकेर)	78
6.	हल्बी	60
7.	सादरी	56
8.	ओडिया	47
9.	कुडुख	31
10.	बैगानी	30

तालिका 12: जहाँ 90% से अधिक बच्चे किसी एक भाषा में बात करते हैं और शिक्षक बच्चों की घर की भाषा को नहीं समझते, ऐसे प्रकार III स्कूलों में बोली जाने वाली भाषाएँ

क्र. सं.	जिला	स्कूलों की संख्या
1.	सुकमा	141
2.	बस्तर	136
3.	दंतेवाड़ा	112
4.	कांकेर	89
5.	कोंडागाँव	58
6.	बीजापुर	53
7.	जशपुर	52
8.	सूरजपुर	46
9.	नारायणपुर	46
10.	कवर्धा	46

तालिका 13: प्रकार III स्कूलों की सबसे अधिक संख्या वाले जिले

तालिका 12 में छत्तीसगढ़ के प्रकार III के स्कूलों में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली 10 भाषाओं का ब्यौरा दिया गया है। इन आँकड़ों से पता चलता है कि प्रकार III के इन स्कूलों में शिक्षक गोंडी जैसी आदिवासी भाषाओं में सबसे ज्यादा कमजोर दिखाई पड़ते हैं। चूंकि प्रकार III वाले स्कूलों में 90% से ज्यादा बच्चे एक ही भाषा में बात करते हैं और शिक्षक अपने बच्चों की घर की भाषा को बोलना नहीं जानते, इसलिए ज्यादातर बच्चे भाषा के लिहाज से सबसे ज्यादा नुकसानदेह स्थिति में रहते हैं। इन बच्चों के लिए शिक्षण का माध्यम, पाठ्यसामग्री की भाषा और कक्षा में बातचीत के लिए इस्तेमाल होने वाली भाषा बिल्कुल अपरिचित होती है, इसलिए उनकी सीखने संबंधी कठिनाइयाँ बहुत गंभीर रूप ले लेती हैं। इसलिए ये आवश्यक हो जाता है कि प्रकार III के स्कूलों के इन बच्चों की सीखने संबंधी कठिनाइयों को दूर करने के लिए उचित नीतिगत फैसले लिए जाएँ।

प्रकार III के स्कूलों का सबसे अधिक प्रतिशत सुकमा (20.52%), दंतेवाड़ा (18.21%), नारायणपुर (12.11%), बस्तर (9.44%) और बीजापुर (9.35%) में मिलता है।

जिन जिलों में प्रकार III के स्कूलों की संख्या (और प्रतिशत) सबसे ज्यादा है, वे राज्य के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित पुराने बस्तर इलाके के जिले हैं। इनमें सुकमा, दंतेवाड़ा, नारायणपुर, बस्तर, बीजापुर, कोंडागाँव और कांकेर जिले पड़ते हैं। इन स्कूलों में तैनात शिक्षक बच्चों की घर की भाषा बोलना जानते हों, यह सुनिश्चित करने के लिए नीति-निर्माताओं को फौरन ध्यान देना चाहिए।

4.5.4. प्रकार IV के स्कूल

प्रकार IV के स्कूलों में दो से अधिक मुख्य भाषाओं को बोलने वाले बच्चों के समूह होते हैं और यहाँ शिक्षण के माध्यम में बच्चों की निपुणता सीमित (या संतोषजनक) ही होती है।

प्रकार IV के स्कूलों को किसी संपर्क भाषा की मौजूदगी या गैर-मौजूदगी के आधार पर उपश्रेणियों में भी बाँटा जा सकता है। संपर्क भाषा (जिसे लिंग्वा फ्रांका भी कहा जाता है) कोई ऐसी आम भाषा होती है, जिसका अलग-अलग मातृभाषाओं वाले

लोग आपस में संवाद के लिए इस्तेमाल करते हैं। **प्रकार IVए के स्कूल ऐसे होते हैं, जहाँ कोई संपर्क भाषा मौजूद है और बच्चे उस संपर्क भाषा को समझते हैं। ऐसी स्थितियों में कक्षा के भीतर बातचीत को सुगम बनाने के लिए संपर्क भाषा का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया जा सकता है**– बशर्ते शिक्षक की संपर्क भाषा पर अच्छी पकड़ हो। उदाहरण के लिए, जिस कक्षा में 10 गोंडी भाषी और 10 धुरवी भाषी बच्चे हैं, वहाँ हल्बी को एक संपर्क भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। **मगर प्रकार IVबी के स्कूलों में संपर्क भाषा या तो होती नहीं है या संपर्क भाषा में बच्चों की निपुणता कम होती है।** ऐसी स्थितियों में विभिन्न भाषा समूहों के बच्चों के बीच संवाद ज्यादा कठिन हो जाता है।

छत्तीसगढ़ में प्रकार IV किस्म के 1,498 (लगभग 5%) स्कूल हैं। प्रकार IV के सभी 100% स्कूलों में संपर्क भाषा मौजूद है। इस प्रकार के 1,363 स्कूलों के बच्चों की संपर्क भाषा पर अच्छी/संतोषजनक पकड़ है, जबकि शेष 135 स्कूलों के बच्चों की संपर्क भाषा पर पकड़ सीमित है। यहाँ सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाली संपर्क भाषाओं में छत्तीसगढ़ी, हिन्दी, हल्बी, सादरी और सरगुजिहा प्रमुख हैं।

क्र. सं.	सम्पर्क भाषा	स्कूलों की संख्या
1.	छत्तीसगढ़ी	382
2.	हिन्दी	313
3.	हल्बी	136
4.	सादरी	126
5.	सरगुजिहा	113
6.	भतरी	65
7.	ओडिया	55
8.	गोंडी (बस्तर)	54
9.	अन्य	49
10.	गोंडी (कांकेर)	42

तालिका 14: प्रकार IV स्कूलों में सबसे प्रचलित संपर्क भाषाएँ

क्र. सं.	जिला	स्कूलों की संख्या
1.	जशपुर	194
2.	बलरामपुर	120
3.	रायगढ़	93
4.	बीजापुर	80
5.	बस्तर	79
6.	सुकमा	79
7.	कोंडागाँव	77
8.	महासमुंद	73
9.	दंतेवाड़ा	62
10.	सूरजपुर	61

तालिका 15: प्रकार IV के सबसे ज्यादा स्कूलों वाले जिले

तालिका 15 में उन जिलों के बारे में बताया गया है, जहाँ प्रकार IV के स्कूलों की संख्या दूसरे जिलों से ज्यादा है। यहाँ आप देख सकते हैं कि ये सभी इलाके सीमावर्ती जिलों में पड़ते हैं और लिहाजा ये एक अन्य भाषा समुदाय के बच्चे हैं। उदाहरण के लिए, रायगढ़ में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली 3 भाषाएँ हैं– छत्तीसगढ़ी, हिन्दी और ओडिया, (जोकि वास्तव में ओडिया की एक किस्म है, जिसे संबलपुरी के नाम से जाना जाता है, यह मानक ओडिया नहीं है)। ओडिया पड़ोसी राज्य ओडिशा की सरकारी भाषा है। इसी तरह, जशपुर और बलरामपुर में सादरी एक प्रमुख भाषा है, क्योंकि यहाँ निकटवर्ती झारखंड का गहरा असर मिलता है। बीजापुर और बस्तर जिलों में आदिवासी आबादी काफी ज्यादा हैं, जिसके चलते यहाँ एक ही कक्षा में गोंडी की दो से अधिक किस्मों के साथ-साथ हल्बी, दोरली या भतरी आदि भाषाएँ भी दिखाई पड़ती हैं। इन सभी स्कूलों में शिक्षकों ने ऐसी संपर्क भाषाओं को भी चिह्नित किया, जिनका विभिन्न भाषायी समुदाय के लोग एक-दूसरे के साथ संवाद के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। भले ही संपर्क भाषा में बच्चों की निपुणता बहुत सीमित हो, तो भी पढ़ाई-लिखाई के लिए हिन्दी के इस्तेमाल के मुकाबले संपर्क भाषा का इस्तेमाल ज्यादा फायदेमंद साबित होगा।

5. अनुशंसाएँ

छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में, जहाँ लगभग 95% बच्चे घर की ऐसी भाषा बोलते हैं, जोकि शिक्षण के माध्यम यानी हिन्दी से अलग है, वहाँ ज्यादातर स्कूलों में बहुभाषी शिक्षा जरूरी हो जाती है। ऐसी शिक्षा में बच्चों की भाषाओं को कक्षा के भीतर उनका उचित स्थान दिया जाता है। राज्य सरकार इस स्थिति को समझती है और लिहाजा कक्षा में बच्चों की प्रथम भाषा को लागू करने के लिए प्रयासरत है।

''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुभाषी शिक्षण की अनुसंशा करती है। जिला सुकमा में भी भाषायी विविधता देखने को मिलती है। एक ही कक्षा में दो, तीन भाषाओं के बच्चे अध्ययन करते हैं। इस हेतु बहुभाषी शिक्षण की प्रक्रिया अपना कर स्थानीय भाषाओं में सामग्री का निर्माण एवं उपयोग किया जाए, शिक्षकों का प्रशिक्षण किया जाए। स्थानीय शिक्षकों की नियुक्ति की जाए। स्थानीय बोली भाषा की सामग्रियों का निर्माण किया जाए। बच्चों की भाषा नहीं जानने वाले शिक्षकों के लिए भाषायी प्रशिक्षण दिया जाए एवं टीचर गाइड का निर्माण किया जाए।''

– श्री रजनीश सिंह, असिस्टेंट प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर, सुकमा

छत्तीसगढ़ के स्कूलों में विविधि भाषयी परिस्थितियों को देखते हुए यहाँ बहुभाषी शिक्षा की किसी एक पद्धति से भी काम नहीं चल सकता। यहाँ की विविधातापूर्ण सामाजिक–भाषायी स्थिति के अनुकूल स्कूलों की श्रेणी और पद्धति का एक उचित मानचित्र तैयार करना होगा। तभी बहुभाषी शिक्षा के लिए उपयुक्त नीति तय की जा सकती है।[14]

5.1. बहुभाषी शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों का सुझाव

5.1.1. पद्धति 1 : मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (MTB-MLE)

5.1.2. पद्धति 2 : बच्चों की प्रथम भाषा (L1) का व्यापक और रणनीतिक प्रयोग एवं L2 शिक्षण का औपचारिक माध्यम

5.1.3. पद्धति 3 : जहाँ शिक्षक बच्चों की भाषा न जानते हों

5.1.4. पद्धति 4 : कक्षा की बहुभाषिकता का एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल करते हुए कई भाषाओं में काम करना।

5.1.5. अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों और विभिन्न भाषायी क्षेत्रों में आकर बसे प्रवासी मजदूरों के बच्चों के लिए रणनीतियाँ

इस भाग में पहले हम बहुभाषी शिक्षा की ऐसी भिन्न पद्धतियों का खाका पेश करेंगे, जो छत्तीसगढ़ के स्कूलों के लिए प्रासंगिक हो सकती हैं। इन सारी पद्धतियों के ब्यौरे परिशिष्टों में देखे जा सकते हैं।

---

[14] परिशिष्टों में दिया गया यह भाग और उससे संबंधित जानकारियाँ धीर झिंगरन द्वारा लिखित 'रोडमैप फॉर MLE प्लानिंग एंड इम्प्लीमेंटेशन–एनईपी 2020 एंड निपुण भारत' से ली गई हैं।

5.1.1. पद्धति 1: मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (MTB-MLE)

ऐसी स्थितियाँ, जहाँ MTB-MLE पद्धति उपयुक्त होगी-

- जहाँ सभी बच्चों की घर की भाषा समान है।
- बच्चों की L1 भाषा L2 भाषा से बहुत भिन्न है (एक-दूसरे से बिल्कुल असंबद्ध भाषाएँ)।
- स्कूल में दाखिले के समय बच्चों के पास L2 की समझ सीमित होती है या कोई समझ नहीं होती हैं।
- स्कूल के बाहर L2 भाषा के उपयोग के सीमित अवसर या कोई अवसर नहीं।
- माता-पिता की तरफ से सहायता और घर में साक्षरता का अभाव।
- सामूहिक या सामुदायिक पहचान का बोध, जो शिक्षा में L1 के इस्तेमाल को स्वीकार्यता प्रदान करने में मदद दे सकता है।
- शिक्षा में इस्तेमाल के लिए L1 की भाषा को विकसित करने की जरूरत है।
- शिक्षकों और बच्चों की भाषायी पृष्ठभूमि एक जैसी हो।

रणनीतियाँ :

- बच्चों की L1 भाषा को ही 5-8 वर्षों तक शिक्षण के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाए, (L2 को विषय के रूप में पढ़ाया जाए और L3 को कक्षा 3 से विषय के रूप में पढ़ाया जाए) - लेट एक्जिट मॉडल।
- बच्चों की L1 भाषा को 2-3 वर्षों तक शिक्षण के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाए, फिर L1/L2 को माध्यम के रूप में अपनाया जाए और उसके बाद केवल L2 को माध्यम बनाया जाए - अर्ली एक्जिट मॉडल।

मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा पद्धति में बच्चों की L1 भाषा को ही शुरुआती 5 से 8 वर्षों तक शिक्षण के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इस पद्धति में बच्चे पहले L1 में ही साक्षरता प्राप्त करते हैं। इस बात का ख्याल रखा जाता है कि शैक्षिक सामग्री और पाठ्यचर्या भी बच्चों की भाषाओं में और समुदाय के सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ी हो। राज्य की भाषा, जो कि बच्चों के लिए L2 है, उसका कक्षा-2 से एक विषय के रूप में मौखिक रूप से परिचय कराया जाता है और उसके बाद L2 में साक्षरता कौशलों पर काम किया जाता है। कक्षा-3 से अंग्रेजी जैसी किसी तीसरी भाषा को भी शुरू किया जा सकता है। पहले यह भी मौखिक रूप से और आगे की कक्षाओं में लिखने-पढ़ने के साथ सिखाई जाएगी। जब बच्चे L2 में कुछ अकादमिक कुशलता प्राप्त कर लें तो उसे शिक्षण के माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है।

यहाँ इस बात को समझना जरूरी है कि MTB-MLE पद्धति एक सघन पद्धति होती है और इसके लिए मजबूत नीतिगत एवं राजनीतिक सहायता की जरूरत पड़ती है। साथ ही, समुदाय में भी अपनी भाषा को शिक्षण की औपचारिक भाषा के रूप में देखने की इच्छा होनी चाहिए। यह पद्धति सफलतापूर्वक चलाई जा सके, इसके लिए L1 को और विकसित करने की जरूरत भी पड़ सकती है, ताकि उसकी लेखन व्यवस्था मजबूत हो, उसकी शब्दावली का विस्तार हो, उसमें पाठ्यचर्यात्मक सामग्री और पूरक साहित्य आदि रचे जाएँ।

5.1.2. पद्धति 2: बच्चों की प्रथम भाषा (L1) का मौखिक रूप से व्यापक और रणनीतिक प्रयोग एवं L2 शिक्षण का औपचारिक माध्यम

इस पद्धति के लिए आवश्यक स्थितियाँ:

- लगभग सभी बच्चों की L1 भाषा में L2 भाषा के साथ कुछ समानता हो (ये परस्पर संबद्ध भाषाएँ हो सकती हैं या एक ही भाषा की किस्में या L2 और स्थानीय भाषाओं का मिश्रण हो सकता है)।

- बच्चों के पास स्कूल में दाखिले के समय L2 भाषा के मानक रूप की सीमित समझ हो।
- स्कूल के बाहर भी L2 भाषा का कुछ प्रयोग देखने को मिले।
- माता-पिता की ओर से सहायता और घर में साक्षरता की कमी।
- L1 को शिक्षा में औपचारिक प्रयोग के लिए उपयुक्त न माना जाता हो और लिहाजा उसे तत्काल शिक्षण के माध्यम के रूप में इस्तेमाल न किया जा सके।
- शिक्षक भी बच्चों की L1 भाषा को जानते हों।

रणनीतियाँ:

इस पद्धति में मुख्य रूप से 5 तरीके अपनाए जाते हैं :

- स्कूल के शुरुआती महीनों में होने वाली पढ़ाई-लिखाई बच्चों की घर की भाषा में ही की जाए।
- घर की भाषा और स्कूली भाषा का बच्चों के स्तर के अनुसार संतुलित और सुनियोजित प्रयोग किया जाए।
  - घर की भाषा - नई या कठिन अवधारणाओं, उच्च स्तरीय चिंतन एवं अभिव्यक्ति के लिए
  - स्कूली भाषा - सरल चर्चा, परिचित सामग्री या अवधारणाओं के लिए
- बेहतर समझ और अच्छी तरह सीखने के लिए घर की भाषा और स्कूली भाषा के मिश्रण को अपनाया व बढ़ावा दिया जाए।
  - बच्चे घर की भाषा में बात करें; शिक्षक स्कूली भाषा में या घर की व स्कूली भाषा के मिश्रण के सहारे जवाब दें।
  - बच्चों को समझने में मदद देने के लिए शिक्षक स्कूली भाषा और घर की भाषा के मिले-जुले इस्तेमाल के सहारे काम करें।
  - बेहतर अभिव्यक्ति और संवाद के लिए बच्चे दोनों भाषाओं के मिश्रण का इस्तेमाल करें।
- पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए बच्चों की घर की भाषाओं की मदद ली जाए।
  - घर की भाषा के परिचित शब्दों के सहारे डिकोडिंग सिखाई जाए।
  - लिखने में मिश्रित भाषा अभिव्यक्ति को स्वीकार किया जाए।
- सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में बच्चों के सांस्कृतिक और संदर्भित ज्ञान का समावेश किया जाए।
  - स्थानीय त्यौहारों, फसलों, चिड़ियों, पशुओं, खाद्य पदार्थों, लोगों के कामकाज पर चर्चा की जाए।
  - शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) के निर्माण में स्थानीय संदर्भों को शामिल किया जाता है।
  - पाठ्यचर्या और अवधारणाओं के साथ जुड़ाव हो।

इस पद्धति के तहत प्राइमरी स्कूल के शुरुआती वर्षों में बच्चों की L1 भाषा का मौखिक रूप से रणनीतिक और व्यापक इस्तेमाल किया जाता है। अपरिचित स्कूली भाषा यानी L2 को शिक्षण के माध्यम के तौर पर ही रखा जाता है। नई अवधारणाओं को समझने, उच्चस्तरीय चिंतन व तर्कशीलता के लिए तथा शुरुआती कक्षाओं में मौखिक अभिव्यक्ति के लिए L1 भाषा का ही इस्तेमाल किया जाता है। शुरुआती कक्षाओं में दूसरी भाषा पढ़ाने और सीखने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ अपनाई जाती हैं, जिनमें L2 की शब्दावली पढ़ाना और L2 को सीखने के लिए L1 का सहारा लेना भी शामिल है। कक्षा में L1 और L2 का उचित और संतुलित इस्तेमाल किया जाता है। प्रवाहमयी अभिव्यक्ति के लिए भाषाओं के मिले-जुले रूप को सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा माना जाता है।

जहाँ MTB-MLE पद्धति को क्रियान्वित करना संभव नहीं है, वहाँ इस पद्धति को एक व्यवहारसम्मत पद्धति माना जा सकता है। जिन स्थितियों में नीति निर्माता और समुदाय के लोग L1 को औपचारिक स्कूल व्यवस्था में पूरी तरह समाहित करने के लिए तैयार नहीं हैं, वहाँ भाषायी नुकसान को पाटने के लिए L1 को कम से कम मौखिक रूप से इस्तेमाल किया ही जा सकता है।

5.1.3. पद्धति 3 : जब शिक्षक बच्चों की भाषा नहीं जानते हैं

इस पद्धति के लिए आवश्यक स्थितियाँ:

- शिक्षण का माध्यम बच्चों की L1 भाषा से भिन्न हो
- शिक्षक बच्चों की L1 भाषा को न जानते हों
- फिलहाल L1 भाषी शिक्षक की नियुक्ति/तैनाती संभव नहीं हो
- या, जब कक्षा में कई L1 भाषाएँ हों और शिक्षक उनमें से किसी एक अथवा कुछ या सभी L1 भाषाओं को न जानते हों।

रणनीतियाँ :

कायदे से यह बहुभाषी शिक्षा की पद्धति नहीं है, लेकिन यदि शिक्षक अपने बच्चों की एक या अधिक मातृभाषाओं को नहीं जानते हों तो कक्षा को 'संभालने' के लिए इन रणनीतियों का इस्तेमाल कर सकते हैं। पद्धति 1 और पद्धति 2, दोनों के लिए जरूरी है कि शिक्षक बच्चों की मातृभाषा में निपुण हों। मगर, कुछ स्थितियों में (उदाहरण के लिए प्रस्तुत रिपोर्ट के भाग 4.5.3 और 4.5.4 में दिए गए सामाजिक-भाषायी प्रकारों के तहत प्रकार III और प्रकार IV के स्कूलों) में ऐसा हो सकता है कि शिक्षक बच्चों की भाषा न जानते हों। ऐसी स्थितियों में भी शिक्षक बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के लिए और बच्चों को सीखने में मदद देने के लिए कुछ खास तरीके अपना सकते हैं।

- बच्चों की बात गौर से सुनें
- बच्चों की घर की भाषा में मिलने वाले आम शब्द और वाक्यांश समझने का प्रयास करें।
- कक्षा में पढ़ाने के समय L1 और L2 भाषाओं का मिश्रण इस्तेमाल करें
- बड़ी कक्षाओं के बच्चों और अन्य शिक्षकों की मदद लें
- बच्चों की भाषा को सीखने के लिए शब्दावली तैयार करते रहें
- समुदाय के लोगों से बात करें

ये तरीका आदर्श तो नहीं है, क्योंकि इसमें ये सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है कि शिक्षक कक्षा में अपने बच्चों की भाषाओं को बोलने या कम से कम समझने में सक्षम हों। नीति में इस प्रयास पर जोर दिया जाना चाहिए कि शिक्षकों की नियुक्ति, प्रशिक्षण या तबादला उन स्कूलों में किया जाए, जिनकी भाषाएँ बोलने में वे सक्षम हों। सो, इस पद्धति में जो तरीका सुझाया गया है, उसको एक संतोषजनक या वक्ती बंदोबस्त के रूप में ही देखा जा सकता है।

5.1.4. पद्धति 4 : कक्षा की बहुभाषिकता को एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल करते हुए कई भाषाओं में काम करना

इस पद्धति के लिए जरूरी स्थितियाँ:

- एक ही कक्षा में अलग-अलग घरेलू भाषाओं (L1) वाले बच्चे हों
- कक्षा में कोई 'लिंग्वा फ्रांका' या संपर्क भाषा हो, जिसे बच्चे कक्षा-1 में दाखिले के समय कुछ हद तक समझते हों या वहाँ कोई संपर्क भाषा न हो अथवा बच्चे कक्षा-1 में दाखिले के समय उसे बोलना/समझना न जानते हों।
- शिक्षक एक या दो L1 भाषाओं और/या इलाके की लिंग्वा फ्रांका को जानते हों।

रणनीतियाँ :

कुछ कक्षाओं में बच्चे दो या इससे अधिक घर की भाषाओं में बात करते दिखाई पड़ते हैं। इस तरह के स्कूल सामाजिक-भाषायी श्रेणियों में प्रकार IV के तहत आते हैं। ऐसी स्थितियों को संभालना थोड़ा मुश्किल हो सकता है, मगर पर्याप्त धैर्य और बहुभाषिता के प्रति सकारात्मक रवैये की मदद से शिक्षक कक्षा में एक ऐसी जैविक प्रक्रिया चला सकते हैं, जिसमें कक्षा संवाद के लिए L2 के साथ एक से अधिक घरेलू भाषाएँ शामिल हों।

इस तरह की कक्षाओं में कुछ खास तरीके अपनाए जा सकते हैं। जैसे :

- एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद।
- शिक्षक द्वारा भाषाओं की तुलना।
- कक्षा-1 में शिक्षक को सहायता देने के लिए बच्चों की L1 पृष्ठभूमि वाले टीचिंग असिस्टेंट/शिक्षक सहायकों की मदद ली जाए।
- **कक्षा में ट्रांसलैंग्वेजिंग :** इस पद्धति में भाषाओं के स्वाभाविक मिश्रण का सहारा लिया जाता है, जिसमें हम एक ही वाक्य के दौरान एक भाषा से दूसरी भाषा में जा सकते हैं, एक भाषा के शब्द या वाक्यांश के स्थान पर दूसरी भाषा के शब्द या वाक्यांश का इस्तेमाल कर सकते हैं, या एक वाक्य के बाद दूसरी भाषा में जा सकते हैं। यानी, अलग-अलग भाषाओं को एक-दूसरे से कटे हुए सख्त ख़ानों में बाँटकर न देखा जाए, बल्कि उन्हें बच्चों की बहुभाषी संपदा के स्वछंद प्रयोग के जरिए संचार व संप्रेषण के सहज वातावरण के हिस्से के तौर पर अपनाया जाए।
- जब अलग-अलग समूहों के बीच संवाद के लिए किसी लिंग्वा फ्रांका या सम्पर्क की भाषा का इस्तेमाल किया जाता है और बच्चे स्कूल में दाखिले के समय उसे कुछ हद तक समझते हों, तो उसे शिक्षण के माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। (यदि समुदाय उसके इस्तेमाल के पक्ष में हो) या बच्चों को एक-दूसरे के साथ समझते हुए बात करने या L2 को सीखने में सहायता के लिए उसे संपर्क भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जाए।

5.1.5. अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों तथा भिन्न भाषायी क्षेत्र में आकर बसे प्रवासी मजदूरों के बच्चों के लिए रणनीतियाँ

इस पद्धति के लिए जरूरी परिस्थितियाँ:

- बच्चों की भाषा को राज्य के भीतर या देश के दूसरे भागों में शिक्षण के माध्यम के तौर पर मान्यता दी गई हो, मगर उस इलाके में यह मान्यता नहीं मिली है, जहाँ वह स्कूल स्थित है।
- लगभग सभी बच्चों की L1 भाषा एक ही है।
- स्कूल के बाहर L2 के उपयोग के अवसर हैं।
- बच्चों की L1 भाषा पृष्ठभूमि वाले शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं।

बच्चों की L1 भाषा को सारी प्राथमिक कक्षाओं के लिए माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। यदि समुदाय में पहचान का बहुत सख्त बोध हो और लोग अपनी भाषा व संस्कृति को बहुत मान देते हों, तो वे उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के स्तर पर भी L1 भाषा को माध्यम के तौर पर अपनाने की माँग कर सकते है। मगर, आमतौर पर उच्च प्राथमिक स्कूल की आखिरी कक्षाओं तक आते-आते बच्चों राज्य की सरकारी भाषा की ओर संक्रमण के लिए दबाव बढ़ने लगता है। इसका मतलब है कि यहाँ तक आते-आते बच्चों को L2 भाषा पर इतनी पकड़ बना लेनी चाहिए कि वे उच्च प्राथमिक स्तर से

उसको शिक्षण के माध्यम के तौर पर इस्तेमाल कर सकें। कक्षा 4–5 में अलग–अलग विषयों के लिए L1 और L2, दोनों को माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। अंग्रेजी को कक्षा–3 की शुरुआत से एक विषय के रूप में पढ़ाया जा सकता है। यदि प्रवासी समुदाय ने क्षेत्रीय भाषा को अपना लिया है और बच्चे उसे समझने लगे हैं तो ये तरीका अपनाने की जरूरत नहीं है।

5.2. सामाजिक–भाषायी परिस्थितियों के अनुसार अलग–अलग प्रकार के लिए उपुयक्त बहुभाषी शिक्षा की पद्धतियाँ

रिपोर्ट के इस हिस्से में कुछ ऐसी प्रमुख पद्धतियों का खाका पेश किया गया है, जिनको विभिन्न सामाजिक–भाषायी प्रकारों के स्कूलों की खास चिंताओं को संबोधित करने के लिए इस्तेमाल और क्रियान्वित किया जा सकता है। प्रत्येक किस्म का स्कूल कुछ खास चुनौतियाँ पेश करता है तो साथ ही अनूठे अवसर भी देता है, जिनका प्रभावी नीतियाँ और योजनाएँ विकसित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

सामाजिक–भाषायी प्रकार	अनुशंसित पद्धति	विवरण
प्रकार II[15]	पद्धति 1/पद्धति 2	जिन स्कूलों में सभी बच्चे गोंडी आदि आदिवासी भाषा बोलते हों, (जैसे दंतेवाड़ा में) और शिक्षक भी उसी भाषायी पृष्ठभूमि से हों और स्थानीय समुदाय उस भाषा को स्कूल में माध्यम के तौर पर अपनाए जाने के पक्ष में दिखाई पड़ रहा हो (वहाँ MTB-MLE कार्यक्रम चलाने के लिए शिक्षकों की क्षमता और पाठ्यचर्या में उचित बदलाव किए जा सकते हैं। (पद्धति 1)
		जहाँ स्कूल के ज्यादातर बच्चे एक जैसी भाषा बोलते हैं, जैसे कि छत्तीसगढ़ी; जहाँ बच्चों की भाषा में हिन्दी के साथ काफी समानताएँ हैं, वहाँ बच्चों की भाषा को मौखिक रूप से व्यवस्थित ढंग से समाहित किया जा सकता है (पद्धति 2)। पद्धति 2 को ऐसे स्कूलों में भी क्रियान्वित किया जा सकता है, जहाँ कोई आदिवासी भाषा बोली जाती है, मगर वहाँ अभी MTB-MLE पद्धति अपनाने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ मौजूद नहीं हैं।
		अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों या उल्लेखनीय प्रवासी आबादी वाले इलाकों में समुदाय इस बात के लिए दबाव डाल सकता है कि उनके बच्चे ऐसे स्कूलों में जाएँ, जहाँ उनकी भाषा में पढ़ाई होती है; इसके लिए क्षेत्रीय भाषा को धीरे–धीरे लागू करने की जरूरत होगी – पहले एक विषय के रूप में और अंततः एक माध्यम के तौर पर।
प्रकार III	पद्धति 2/पद्धति 3	ये प्रकार भी प्रकार II से काफी मिलती–जुलती है, मगर इसमें शिक्षक बच्चों की भाषा में निपुण नहीं होते। ऐसे स्कूलों में शिक्षकों के नए सिरे से तबादलों पर ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे वे ऐसे स्कूलों में जा सकें, जहाँ वे बच्चों की भाषा बोलते हों। सर्वेक्षण के डेटा से पता चलता है कि राज्य में इस तरह के 437 (1.47%) स्कूल हैं।

[15] इस तालिका में प्रकार I स्कूलों का उल्लेख नहीं किया गया है, क्योंकि इन स्कूलों में भाषायी नुकसान की संभावना बहुत कम होती है।

		जहाँ शिक्षकों के नए सिरे से तबादले संभव नहीं हैं, वहाँ अध्यापक अपनी कक्षाओं में संवाद को 'संभालने' के लिए पद्धति III के सिद्धांतों का प्रयोग कर सकते हैं। पद्धति II से मदद लेते हुए बच्चों को भी इसके लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे कक्षा में होने वाले संवाद के लिए अपनी मातृभाषाओं का प्रयोग करें।
प्रकार IV	पद्धति 2/पद्धति 4	ये एक ऐसी स्थिति है, जहाँ एक ही कक्षा के बच्चे दो से ज्यादा भाषायी पृष्ठभूमियों से आते हैं, जैसे- सादरी, कुडुख और छत्तीसगढ़ी। ऐसी स्थितियों में संवाद को सुगम बनाने के लिए किसी संपर्क भाषा का इस्तेमाल किया जा सकता है। ये ऐसी भाषा होगी, जो विभिन्न भाषा समुदायों के बीच संवाद के लिए इस्तेमाल की जाती है। आँकड़ों से पता चलता है कि राज्य के प्रकार IV के 100% स्कूलों में संपर्क भाषा मौजूद है। पद्धति IV में इस आशय के कुछ सिद्धांत भी तय किए गए हैं कि कक्षा में मौजूद अलग-अलग भाषाओं को अनुवाद, ट्रांसलैंग्वेजिंग, तुलना, वैषम्य, बड़ी कक्षाओं के बच्चों और समुदाय के सदस्यों की सहायता आदि के जरिए एक अधिगम संसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।
		जिन स्थितियों में शिक्षक या बच्चे संपर्क भाषा से परिचित न हों, जैसा कि प्रकार IV के स्कूलों में होता है, तो ऐसी स्थिति के लिए कोई निश्चित समाधान तय नहीं किया गया और इस दिशा में और अनुसंधान की आवश्यकता है।

तालिका 16: विभिन्न सामाजिक-भाषायी प्रकारों के अंतर्गत आने वाले स्कूलों के लिए संस्तुत बहुभाषी शिक्षा की पद्धतियाँ

प्रकार II के स्कूलों के लिए, जहाँ 90% से अधिक बच्चे घर की कोई एक भाषा बोलते हों और जहाँ शिक्षक भी उस भाषा को बोलना जानते हों, वहाँ कई अलग-अलग तरीके सुझाए जा सकते हैं। पद्धति 1 (जिसका ब्यौरा भाग 5.1.1 में दिया गया है) वह है, जहाँ प्राइमरी कक्षाओं में कई वर्ष तक बच्चों की मातृभाषा को माध्यम के तौर पर औपचारिक रूप से इस्तेमाल किया गया हो (MTB-MLE पद्धति)। यहाँ हिन्दी को धीरे-धीरे शुरू किया जाता है- पहले एक विषय के रूप में और बाद में शिक्षण के माध्यम के तौर पर (मातृभाषा के साथ या मातृभाषा के स्थान पर)। MTB-MLE पद्धति भाषाविदों और शोधकर्त्ताओं की सिफारिशों के हिसाब से भले ही आदर्श हो, मगर इस पद्धति के लिए आवश्यक स्थितियों को मनवाने और कामयाब बनाने में काफी मुश्किलें पेश आती हैं। इसके लिए जरूरी है कि स्थानीय समुदाय अपनी भाषा को कम से कम शुरुआती वर्षों में शिक्षण के माध्यम के तौर पर अपनाए जाने के लिए तैयार हो।

हमेशा ऐसा नहीं होता, क्योंकि हिन्दी और अंग्रेजी जैसी भाषाएँ लोगों के आकांक्षा जगत का हिस्सा होती हैं। इनके माध्यम से माँ-बाप और समुदाय को आर्थिक व सामाजिक लाभ के अवसरों की ज्यादा वास्तविक संभावना दिखाई देती है। सुकमा जिले में एक बच्चे के अभिभावक ने बताया :

''शिक्षण का माध्यम मातृभाषा होने पर बच्चों के लिए सुविधा होगी, लेकिन हम यह भी चाहते हैं कि हमारे बच्चे हिन्दी भी जल्दी सीखें। अपनी भाषा के साथ-साथ बच्चे स्कूल में बोली जाने वाली भाषा भी जल्द सीखें, क्योंकि आगे चलकर बच्चों को यही भाषा काम आएगी।''

- श्री अंतूराम कश्यप, अभिभावक, सुकमा जिला

MTB-MLE पद्धति के लिए पाठ्यचर्या विकास, साहित्य के विकास और बच्चों की मातृभाषा में शिक्षकों के क्षमतावर्द्धन पर जोर देना भी जरूरी है। जिन स्थितियों में MTB-MLE एक व्यावहारिक समाधान नहीं हो सकता, वहाँ कक्षा में होने वाले मौखिक संवादों में बच्चों की घर की भाषा को औपचारिक रूप से शामिल करके बहुभाषी शिक्षा की तरफ कुछ कदम बढ़ाए जा सकते हैं, जबकि माध्यम के तौर पर हिन्दी को ही जारी रखा जा सकता है। इस पद्धति (भाग 5.1.2 में वर्णित पद्धति 2) को सबसे अच्छी तरह तभी क्रियान्वित किया जा सकता है, जब पूरक पाठ्यचर्यात्मक एवं शिक्षा सामग्री को भी बच्चों की भाषा में विकसित किया जाए और जब शिक्षक बच्चों की भाषा और हिन्दी को सुनियोजित ढंग से समेकित करने की पद्धतियों में प्रशिक्षित हों।

प्रकार II के स्कूलों में, जहाँ ज्यादातर बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषा किसी पड़ोसी राज्य की क्षेत्रीय भाषा है, जैसे ओडिया या तेलुगू, वहाँ इन भाषाओं के शिक्षक और पाठ्यचर्या सामग्री उपलब्ध कराने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए। चूँकि ये भाषाएँ देश के अन्य भागों में माध्यम के तौर पर इस्तेमाल हो रही हैं, इसलिए इन भाषाओं में दी जाने वाली शिक्षा बच्चों के माता-पिता की माँग पर कम से कम प्राइमरी कक्षाओं में जरूर मुहैया कराई जा सकती है। प्रकार II के स्कूलों में, ऐसे शिक्षक पहले ही उपलब्ध हैं, जिनके पास इन भाषाओं में संतोषजनक या अच्छी निपुणता मौजूद है। ऐसे स्कूलों में हिन्दी को पहले तो विषय के रूप में और फिर माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है।

प्रकार III के स्कूल भी इस लिहाज से प्रकार II के स्कूलों जैसे ही होते हैं कि वहाँ कक्षा के ज्यादातर बच्चे एक ही मातृभाषा बोलते हैं। मगर इस आधार पर भिन्न भी होते हैं कि यहाँ के शिक्षक बच्चों की भाषा में निपुण नहीं होते, जबकि प्रकार II के शिक्षक बच्चों की भाषा में निपुण होते हैं। छत्तीसगढ़ में प्रकार III स्कूलों की संख्या लगभग 1,299 (लगभग 4% है)। इन स्कूलों में पहली प्राथमिकता ये सुनिश्चित करने को दी जानी चाहिए कि शिक्षक कम से कम प्राइमरी कक्षाओं में अपने बच्चों की मातृभाषा में उनके साथ बात करने में सक्षम हों। इसके लिए शिक्षकों के नए सिरे से तबादले किए जा सकते हैं, जिससे वे उन स्कूलों में पढ़ा सकें, जहाँ के बच्चों की मातृभाषा को वे समझते हैं या मौजूदा शिक्षकों को बच्चों की भाषाओं में प्रशिक्षित किया जाए। जहाँ ये सुनिश्चित करना संभव नहीं है कि शिक्षक बच्चों की भाषा में बात कर सकें, वहाँ कक्षा में संवाद को संभालने के लिए शिक्षकों हेतु पद्धति III में दिए गए विभिन्न तरीके अपनाए जा सकते हैं। बच्चों को इसके लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे कक्षा के मौखिक धरातल पर L1 भाषा का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें और साथ ही पद्धति 2 के कुछ तरीकों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

प्रकार IV के स्कूलों में एक से अधिक भाषा समुदाय के बच्चे होते हैं। छत्तीसगढ़ में प्रकार IV के स्कूलों की संख्या लगभग 1,498 (लगभग 5%) है और इन सभी स्कूलों में कोई न कोई संपर्क भाषा भी मौजूद है। इन स्कूलों में पद्धति IV (भाग 5.1.4 में वर्णित) सबसे व्यावहारिक हो सकती है, जिसमें शिक्षक अनुवाद, ट्रांसलैंग्वेजिंग या अन्य भाषा शिक्षकों से सहायता या समुदाय के सदस्यों से सहायता लेने जैसे तरीके अपना सकते हैं। संपर्क भाषा में बच्चों व शिक्षक की समझ भी कक्षा में संवाद को बहुत हद तक मदद दे सकती है। कक्षा के मौखिक क्रियाकलापों में संपर्क भाषा का औपचारिक रूप से प्रयोग किया जा सकता है (भाग 5.1.2 में दी गई पद्धति 2 की भाँति)।

6. निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ ने देश भर में पहला राज्यव्यापी भाषायी मानचित्रण करके पूरे देश के लिए एक मिसाल पेश कर दी है। छत्तीसगढ़ सरकार ने लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एलएलएफ) और यूनिसेफ की मदद से जो भाषायी सर्वेक्षण किया है, वह पूरे राज्य में एक कारगर बहुभाषी शिक्षा (MLE) की रूपरेखा तैयार करने और उसको क्रियान्वित करने की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमरेसी मिशन के विजन को साकार करने के लिए सरकारी शिक्षा-में-भाषा नीतियों में बहुभाषी शिक्षा की पद्धतियों का समावेश करना होगा। बहुभाषी शिक्षा की पद्धतियों से विविध सामाजिक, भाषायी एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के बच्चों का समावेश करने और उनके अधिगम परिणामों में सुधार में काफी मदद मिलेगी। सर्वे में जो विस्तृत सूचनाएँ इकट्ठा की गई हैं, उनसे संदर्भ अनुकूल बहुभाषी शिक्षा की नीतियाँ और कार्यक्रम तैयार करने में बहुत महत्वपूर्ण मदद मिलेगी। इससे बच्चों की भाषाओं को भी सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में के एक बहुमूल्य संसाधन के रूप में उनका उचित स्थान मिल सकेगा।

7. राज्य स्तरीय बहुभाषी शिक्षा कार्यशाला की कार्रवाई का विवरण और मुख्य सुझाव

इस भाषायी सर्वेक्षण के मुख्य नतीजों को साझा करने और बहुभाषी शिक्षा की राज्यव्यापी योजना बनाने व क्रियान्वित करने के लिए रायपुर में 7–8 जुलाई को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। छत्तीसगढ़ पहला राज्य है, जहाँ राज्यव्यापी भाषायी सर्वेक्षण पूरा हुआ है और अब राज्य औपचारिक शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं में बच्चों की घर की भाषाओं को शामिल करने की योजना पर काम कर रहा है।

कार्यशाला को राज्य के शिक्षा मंत्री, शिक्षा सचिव, मिशन डायरेक्टर, एडीशनल डायरेक्टर–समग्र शिक्षा और एससीईआरटी के प्रतिनिधियों ने संबोधित किया। वक्ताओं ने इस बात पर खासतौर से जोर दिया कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं में बच्चों की भाषाओं का इस्तेमाल कितना जरूरी होता है। राज्य के प्रतिनिधियों ने बहुभाषी शिक्षा की दिशा में राज्य सरकार द्वारा किए गए प्रयासों के बारे में बताया :

- राज्य सरकार ने कक्षा 1 और 2 के लिए 20 अलग–अलग भाषाओं में द्विभाषी पाठ्यपुस्तकें (भाषा) विकसित की हैं।
- ऑनलाइन कोर्सेज़ तथा प्रत्यक्ष कार्यशालाओं आदि के जरिए राज्य स्रोत समूह के 36 सदस्यों का क्षमतावर्द्धन किया गया है।
- सरकार ने प्रत्येक डाइट और बीएड कॉलेज में बहुभाषी शिक्षा (MLE) प्रभारियों को चिह्नित किया है। बाल साहित्य पर बहुत सारी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिनमें डाइट, एसआरजी सदस्यों और MLE प्रभारियों ने हिस्सा लिया।
- महामारी के दौरान बहुत सारे टीचिंग वीडियो तैयार किए गए थे, जिनका इस कठिन दौर में पढ़ाने के लिए शिक्षकों द्वारा इस्तेमाल किया गया।

कार्यशाला की मुख्य बातें और सुझाव :

- कार्यशाला के दौरान शिक्षण का माध्यम भाषा में बच्चों की निपुणता और बच्चों की घर की भाषाओं में शिक्षकों की निपुणता पर चर्चा के दौरान सहभागियों ने कहा कि इसे 'बहुत सीमित', 'थोड़ी–बहुत', 'संतोषजनक' और 'अच्छा', प्रकारों में बाँटा जाना चाहिए था।
- सहभागियों ने यह भी बताया कि जमीनी यथार्थ और भाषायी सर्वेक्षण के जरिए मिले आँकड़ों में कुछ फर्क है। उदाहरण के लिए– कोरिया जिले में बघेली भाषा का उल्लेख नहीं आया, जबकि इस जिले के बहुत सारे लोग बघेली भाषा में ही बात करते हैं। इसी तरह, सरगुजिहा और छत्तीसगढ़ी भी बहुत सारे लोग बोलते हैं, मगर भाषायी सर्वेक्षण के आँकड़ों में इसका उल्लेख भी नहीं है।
- सुकमा में गोंडी भाषा में तेलुगू की छाप दिखाई देती है, जिसके चलते यहाँ इसे मड़िया गोंडी कहा जाता है और यह किसी भी अन्य इलाके की गोंडी से बिल्कुल भिन्न भाषा है। ओडिशा की सीमा पर पड़ने वाले गरियाबंद जिले में बच्चे संबलपुरी भाषा बोलते हैं। यहाँ सरकार ने हिन्दी और ओडिया भाषा में द्विभाषी पाठ्यपुस्तकें मुहैया कराई हैं (ओडिया लिपी में), मगर ये शिक्षकों और बच्चों के लिए उपयोगी साबित नहीं हुई हैं।
- सुकमा के कोंटा ब्लॉक में समुदाय के लोग और बच्चे तेलुगू बोलते हैं, जो हिन्दी के लिए चुनौती है।
- इस बारे में भी चर्चा हुई कि भाषाओं के नाम कठिन हैं, जिसके कारण भी भाषायी सर्वेक्षण में बहुत सारी भाषाओं का उल्लेख नहीं आ पाया है।
- महासमुंद जिले के सीमावर्ती इलाकों में बच्चे छत्तीसगढ़ी और संबलपुरी भाषाएँ बोलते हैं, जबकि पाठ्यपुस्तकें हिन्दी और ओडिया में हैं। गौरतलब है कि ओडिया भाषा न तो यहाँ के बच्चों को समझ में आती है और न ही शिक्षकों को।

- सहभागियों ने बताया कि सरगुजा में तिब्बती और बंगाली लोग हिन्दी बोल सकते हैं, मगर सरगुजिहा नहीं बोलते। इसी तरह, कांकेर में बंगाली हैं, जिन्होंने छत्तीसगढ़ी अपना ली है और लिहाजा यहाँ के लोगों में गोंडी कांकेर कम बोली जाती है।
- कुछ सहभागियों ने यह भी बताया कि बस्तर के इलाके में जो बच्चे हल्बी समझते हैं, वे भतरी भी समझ सकते हैं। उनका कहना है कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में भतरी को शामिल किया जा सकता है।
- सहभागियों का एक सुझाव ये भी था कि शिक्षक के गृह जिले और उनकी घर की भाषा को भी सर्वे फॉर्म में शामिल किया जाना चाहिए।
- सहभागियों के बीच इस बारे में एक सहमति थी कि अंग्रेजी सीखने के लिए उसे शिक्षण के माध्यम के तौर पर अपनाने की जरूरत नहीं है। मगर, कक्षा में पढ़ाने के तरीकों में बदलाव किया जाना चहिए और अंग्रेजी भी बच्चों की घर की भाषा की मदद से ही पढ़ाई जानी चाहिए।

यदि हम राज्य स्तर पर बहुभाषी शिक्षा पर व्यवस्थित रूप से काम शुरू करना चाहते हैं तो :

- बालवाड़ी को न छोड़ा जाए।
- जिलावार बैठकें बुलाई जाएँ, जहाँ भाषायी सर्वेक्षण के नतीजों के आधार पर विभिन्न रणनीतियों पर चर्चा करके उनको अपनाया जाए।
- जागरूकता से लेकर अवधारणात्मक समझदारी तक शिक्षकों का क्षमतावर्द्धन जरूरी है।
- बहुभाषी शिक्षा की रणनीतियाँ अपनाने के लिए समुदाय की हिस्सेदारी जरूरी है।
- मौजूदा सामग्री की समीक्षा और नई स्थानीय सामग्री का विकास करना होगा।
- केस स्टडीज, शिक्षकों के अनुभवों और दूसरे प्रैक्टिशनर्स के अनुभवों को व्यापक शैक्षिक धरातल पर साझा किया जाना चाहिए।
- शिक्षकों को बच्चों की घर की भाषाओं को औपचारिक सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में शामिल करने के लिए प्रेरित करने हेतु नीतिगत स्तर पर भी फैसले लेने होंगे और शिक्षकों को भाषायी कोटे के आधार पर तैनात किया जाए।

डॉ. धीर झिंगरन, संस्थापक निदेशक-लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन कार्यशाला को संबोधित कर रहे हैं। श्री टैरी डरनियन, चीफ एजुकेशन यूनिसेफ; डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम, माननीय मंत्री, स्कूल शिक्षा, छत्तीसगढ़ सरकार; डॉ. एस. भारतीदासन, सचिव, स्कूल शिक्षा, छत्तीसगढ़ सरकार; श्री नरेंद्र दुग्गा, एमडी, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़ तथा श्री जॉब जकारिया, चीफ, यूनिसेफ छत्तीसगढ़ भी मंच पर (बाएँ से दाएँ) विराजमान हैं।

कार्यशाला की अनुशंसाएँ:

1. लगभग 75% बच्चे हिन्दी नहीं बोलते और न ही समझते, जबकि राज्य में यही शिक्षण का माध्यम है। ये बहुत आवश्यक है कि बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान के लक्ष्य को हासिल करने के लिए औपचारिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में बच्चों की घर की भाषाओं को जरूर शामिल किया जाए।

2. राज्य में लगभग 5,000 स्कूल ऐसे हैं (सुकमा, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, कबीरधाम और बस्तर जिलों में), जहाँ कक्षा-1 के 90% बच्चे किसी आदिवासी भाषा में बात करते हैं। ऐसे में इन जिलों के स्कूलों में मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को अपनाना बहुत ही जरूरी है।

3. लगभग 22,500 स्कूलों में कक्षा-1 के बच्चे कोई ऐसी भाषा (छत्तीसगढ़ी, सरगुजिया, सादरी, बघेली, भोजपुरी, बुंदेलखंडी आदि) बोलते हैं, जिसे जनगणना के तहत 'हिन्दी के अंतर्गत संबद्ध मातृभाषा' का दर्जा दिया गया है। वास्तव में, ये भाषाएँ हिन्दी से बिलकुल भिन्न हैं। लिहाजा, कार्यशाला में ये सुझाव दिया गया कि राज्य के इन स्कूलों को बहुभाषी शिक्षा की दूसरी पद्धति अपनानी चाहिए। यानी शिक्षण का औपचारिक माध्यम स्कूल की भाषा ही होगी, मगर बच्चों की भाषा का मौखिक रूप में व्यापक और रणनीतिक प्रयोग किया जाना चाहिए।

4. कार्यशाला में सुझाव दिया गया कि जिला-ब्लॉक-क्लस्टर स्तरीय अधिकारियों, शिक्षकों और समुदाय के लोगों को औपचारिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में बच्चों की घर की भाषाओं के इस्तेमाल के लिए तैयार करने के वास्ते जिलावार बैठकें आयोजित की जाएँ, ताकि उन्हें इसकी आवश्यकता से अवगत कराया जा सके और उन्हें संवेदनशील बनाया जा सके।

5. बहुभाषी शिक्षा (MLE) की अवधारणा में अंग्रेजी का शिक्षण निहित है और लिहाजा अंग्रेजी शिक्षण की ऐसी प्रक्रियाएँ तय करना जरूरी है, जिनमें अंग्रेजी को माध्यम के तौर पर अपनाने की बाध्यता न हो। अंग्रेजी पढ़ाने के लिए भी बच्चों की L1 भाषा का ही सहारा लिया जाए। अंग्रेजी के सार्थक शब्दों/वाक्यों/बातचीत के जरिए कक्षा-1 से ही बच्चों को अंग्रेजी से परिचित कराया जा सकता है और कक्षा-3 से उन्हें औपचारिक रूप से अंग्रेजी पढ़ाना शुरू किया जा सकता है।

6. बहुत सारे जिले और स्कूल ऐसे हैं, जहाँ शिक्षक भी बच्चों की भाषा नहीं समझते और लिहाजा बच्चों के साथ उनका कोई संप्रेषण नहीं होता। ऐसी स्थिति में शिक्षकों की नियुक्ति की प्रक्रियाओं पर ध्यान देना जरूरी हो गया है। संबंधित स्कूलों की भाषा के अनुसार शिक्षकों की नियुक्ति के लिए कोटा व्यवस्था तय की जानी चाहिए। इसके साथ ही मौजूदा शिक्षकों को भी बच्चों की भाषाओं के अनुसार नए सिरे से संबंधित स्कूलों में तैनात किया जाना चाहिए।

7. छत्तीसगढ़ पहला राज्य है, जिसने एक राज्यव्यापी भाषायी सर्वेक्षण किया है। यदि यहाँ एक राज्यव्यापी बहुभाषी शिक्षण नीति लागू की जाती है, जिसमें विभिन्न भाषायी शिक्षण पद्धतियों का समावेश किया जाए तो छत्तीसगढ़ इस पहल में भी पहला राज्य होगा।

मुख्य अतिथियों एवं कुछ प्रतिनिधियों के उद्धरण-

1. भाषायी सर्वेक्षण के अनुसार प्रत्येक जिले की स्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों व शिक्षा अधिकारियों के लिए संयुक्त या साझा उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। बढ़िया शिक्षा के लिए एक ठोस योजना तैयार की जाएगी और शिक्षकों की ओर से आने वाली माँगों के अनुसार उन्हें प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

- डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम, माननीय मंत्री, स्कूल शिक्षा, छत्तीसगढ़ सरकार

2. बच्चों को हमेशा उनकी घर की भाषा में ही पढ़ाना चाहिए। यह भाषा उनके दिल के नजदीक होती है, लिहाजा इसमें वे ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं। भाषायी सर्वेक्षण से हमें इन बच्चों को एक नई नजर से देखने का मौका मिला है। शिक्षकों को बच्चों की भाषा सीखनी चाहिए और उन्हें बहुभाषी शिक्षा की अवधारणा को समझना चाहिए।

- डॉ. एस. भारतीदासन, सचिव, स्कूल शिक्षा, छत्तीसगढ़ सरकार

3. छत्तीसगढ़ में कुल 93 भाषाएँ/बोलियाँ हैं। भाषायी सर्वेक्षण के नतीजों से हमें एक ऐसी पाठ्यचर्या विकसित करने में मदद मिलेगी, जिसमें हिन्दी और अंग्रेजी के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं का भी मिश्रण होगा।

- श्री नरेंद्र दुग्गा, एमडी, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

4. कोरिया जिले में बघेली भाषा का उल्लेख नहीं था, हालांकि जिले में बहुत सारे लोग बघेली बोलते हैं। बहुत सारे लोग सरगुजिहा और छत्तीसगढ़ी बोलते हैं, मगर यह तथ्य भी सर्वेक्षण में नहीं आ पाया।

- श्री शैलेंद्र गुप्ता, MLE नोडल पर्सन, डाइट-कोरिया

5. गरियाबंद (ओडिशा की सीमा से सटे जिले) में बहुत सारे बच्चे छत्तीसगढ़ी और संबलपुरी बोलते हैं, मगर पाठ्यपुस्तकें ओडिया में है। यहाँ के शिक्षक न तो बच्चों की भाषा समझते हैं और ना ही किताबों की लिखावट पढ़ पाते हैं।

- सुश्री पुष्पा शुक्ला, शिक्षिका, गरियाबंद

6. छत्तीसगढ़ी की भी बहुत सारी किस्में हैं। कहीं उसमें तेलुगू की मिलावट है तो कहीं बांग्ला व ओडिया की मिलावट है। मध्य प्रदेश की सीमा पर तो छत्तीसगढ़ी बिलकुल ही अलग सुनाई पड़ने लगती है। लिहाजा, छत्तीसगढ़ी की सारी किस्मों को आपस में मिलाने से भी कक्षा में बच्चों के सामने आने वाली कठिनाइयों के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाती।

- श्री कार्तिकेय शर्मा, डाइट, कोरिया

परिशिष्ट

परिशिष्ट क

क्र. सं.	भाषा	बोलने वालों की संख्या	बोलने वालों का प्रतिशत
1.	छत्तीसगढ़ी	272367	65.83
2.	सरगुजिहा	38815	9.38
3.	हिन्दी	23464	5.65
4.	हल्बी	17352	4.19
5.	सादरी	16428	3.97
6.	गोंडी (दंतेवाड़ा)	9640	2.33
7.	ओडिया	7218	1.71
8.	गोंडी (बस्तर)	7181	1.73
9.	भतरी	4286	1.04
10.	कुडुख	2895	0.7
11.	गोंडी (कांकेर)	2405	0.58
12.	बांग्ला	1864	0.45

क्र. सं.	भाषा	बोलने वालों की संख्या	बोलने वालों का प्रतिशत
13.	दोरली	1682	0.41
14.	मड़िया	1207	0.29
15.	बैगानी	1159	0.28
16.	बघेली	1137	0.27
17.	धुरवी	1017	0.25
18.	अन्य	977	0.24
19.	तेलुगू	952	0.23
20.	भोजपुरी	296	0.07
21.	कमारी	236	0.06
22.	सिंगरोलिया	186	0.04
23.	मराठी	151	0.04

परिशिष्ट ख

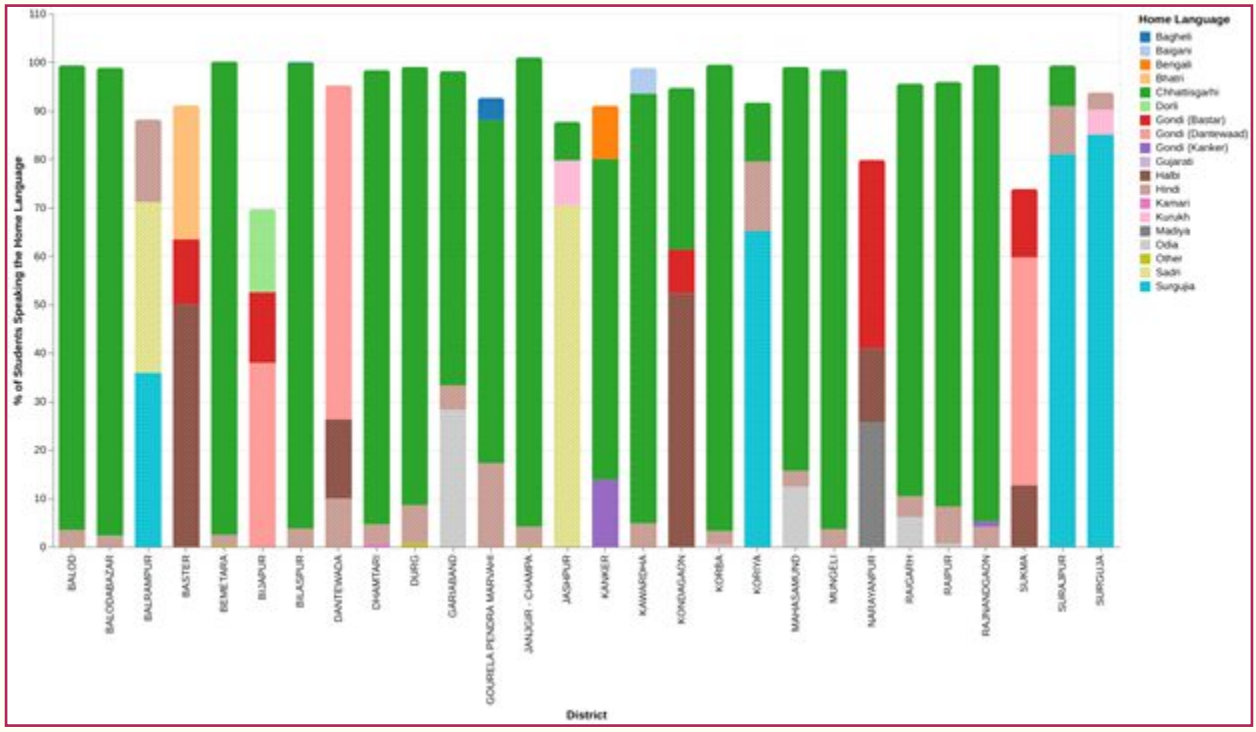

जिले	कक्षा-1 छात्रों द्वारा सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीन भाषाएँ
बालोद, बलौदाबाजार, बेमेतारा, बिलासपुर, धमतरी, दुर्ग, जांजगीर चांपा, कोरबा, मुंगेली, राजनांदगाँव	छत्तीसगढ़ी, हिन्दी
गौरेला, पेंड्रा, मरवाही	छत्तीसगढ़ी, हिन्दी, बघेली
कवर्धा	छत्तीसगढ़ी, बैगानी, हिन्दी
गरियाबंद, महासमुंद, रायगढ़, रायपुर	छत्तीसगढ़ी, ओडिया, हिन्दी
कांकेर	छत्तीसगढ़ी, गोंडी (कांकेर), बांग्ला
बलरामपुर	सरगुजिहा, सादरी, हिन्दी
कोरिया, सूरजपुर	सरगुजिहा, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी
सरगुजा	सरगुजिहा, कुडुख, हिन्दी
बस्तर	हल्बी, भतरी, गोंडी (बस्तर)
कोंडागाँव	हल्बी, छत्तीसगढ़ी, गोंडी (बस्तर)
बीजापुर	गोंडी (दंतेवाड़ा), दोरली, गोंडी (बस्तर)
सुकमा	गोंडी (दंतेवाड़ा), गोंडी (बस्तर), हल्बी
दंतेवाड़ा	गोंडी (दंतेवाड़ा), हल्बी, हिन्दी
नारायणपुर	गोंडी (बस्तर), मड़िया, हल्बी
जशपुर	सादरी, कुडुख, छत्तीसगढ़ी

परिशिष्ट ग

बच्चों की घर की भाषाओं में शिक्षकों की निपुणता

दी गई भाषा में निपुणता वाले शिक्षकों का %			
	भाषा निपुणता		
भाषा	सीमित	संतोषजनक	अच्छा
छत्तीसगढ़ी	2.165	31.1	66.74
सादरी	4.96	38.945	56.09
सरगुजिहा	4.875	39.25	55.88
हिन्दी	5.885	41.34	52.22
बघेली	5.77	43.845	50.385
भतरी	8.095	42.675	49.23
हल्बी	9.285	44.33	46.435
ओडिया	19.66	38.52	41.46
सिंगरोलिया	0	60	40
दोरली	19.255	41.665	39.08
कुडुख	27.495	35.765	36.085
मड़िया	19.515	46.34	34.145
बांग्ला	21.325	47.795	30.88
भोजपुरी	24.285	42.305	30.77
तेलुगू	21	54.335	24.665
गोंडी (दंतेवाड़ा)	32.01	44.845	23.06
मराठी	52.5	25	20
गोंडी (बस्तर)	35.43	45.27	19.195
बैगानी	30.145	52.575	17.28
धुरवी	43.89	39.695	16.415
गोंडी (कांकेर)	29.72	54.03	15.97
कमारी	50	38.28	10.94
अन्य	8.57	38.64	37.5

परिशिष्ट घ

बच्चों की घर की भाषा सीखने या पढ़ाने को इच्छुक शिक्षक

भाषा	ऐसे शिक्षकों का %, जिनके पास उस भाषा में सीमित निपुणता है और उस भाषा को सीखने के इच्छुक हैं	ऐसे शिक्षकों का %, जो उस भाषा में संतोषजनक/अच्छी निपुणता रखते हैं और दूसरे शिक्षकों को भी उस भाषा को सीखने में मदद देने को तत्पर हैं
छत्तीसगढ़ी	95.53	95.60
सादरी	96.33	95.46
सरगुजिहा	93.26	95.12
हिन्दी	98.10	95.07
बघेली	66.66	89.90
भतरी	90.69	91.47
हल्बी	94.28	92.67
ओडिया	77.20	90.60
दोरली	97.22	91.81
कुडुख	77.01	90.66
मड़िया	96	94.95
बांग्ला	90	90.34
भोजपुरी	91	72.34
तेलुगू	75.75	87.76
गोंडी (दंतेवाड़ा)	94.89	90.26
मराठी	59	72.22
गोंडी (बस्तर)	93.82	89.07
बैगानी	76	90.53
धुरवी	91.80	87.07
गोंडी (कांकेर)	93	90.08
कमारी	86.5	76.19
अन्य	100	85.25

परिशिष्ट च

हिन्दी बोलने और समझने में बच्चों की निपुणता का जिलावार डेटा

जिला	हिन्दी बोलने में सीमित निपुणता है	हिन्दी समझने में सीमित निपुणता है	हिन्दी बोलने में संतोषजनक निपुणता है	हिन्दी समझने में संतोषजनक निपुणता है	हिन्दी बोलने में अच्छी निपुणता है	हिन्दी समझने में अच्छी निपुणता है
बालोद	16.71	5.04	71.99	73.46	11.3	21.5
बलौदाबाजार	19.666	6.72	68.45	66.55	11.9	26.72
बलरामपुर	16.75	12.21	68.35	67.91	14.89	19.88
बस्तर	23.15	17.06	60.7	61.75	16.15	21.19
बेमेतारा	19.94	5.68	72.58	75.9	7.48	18.42
बीजापुर	26.52	24.01	60.22	61.65	13.08	14.34
बिलासपुर	21.39	7.93	62.95	63.35	15.66	28.71
दंतेवाड़ा	30	25.25	58.03	60.16	11.8	14.59
धमतरी	27.52	8.72	63.53	71.67	8.94	19.61
दुर्ग	16.06	4.66	62.35	60.45	21.42	34.89
गरियाबंद	21.38	10.12	68.7	71.8	9.92	18.08
गौरेला पेंड्रा मरवाही	15.57	9.43	68.42	66.01	15.79	24.56
जांजगीर चांपा	14.58	6.49	70.69	66.71	14ण.72	26.8
जशपुर	17.74	12.55	66.01	66.07	16.13	21.38
कांकेर	17.83	10.01	68.57	68.38	13.6	21.62
कवर्धा	26.09	16.05	62.11	64.39	11.39	19.57
कोंडागाँव	21.49	14.12	66.98	69.41	11.44	16.46
कोरबा	21.11	10.69	61.11	63.75	17.78	25.56
कोरिया	12.56	7.67	66.86	65.12	20.47	27.21
महासमुंद	14.92	7.1	66.56	62.17	18.52	30.73
मुंगेली	20.8	9.92	68.8	68.48	10.4	21.6
नारायणपुर	31.83	28.38	57.29	59.15	10.88	12.47
रायगढ़	13.83	6.94	69.38	66.06	16.74	26.99
रायपुर	16.48	3.24	64.37	64.08	19.15	32.68
राजनांदगाँव	19.81	7.12	69.98	71.81	10.45	21.07
सुकमा	48.53	44.28	43.26	45.75	8.21	9.97
सूरजपुर	15.74	10.24	67.85	68	16.42	21.76
सरगुजा	18.47	12.5	65.32	66.21	16.21	21.29

परिशिष्ट छ

विभिन्न सामाजिक-भाषायी प्रकारों का जिलेवार वितरण

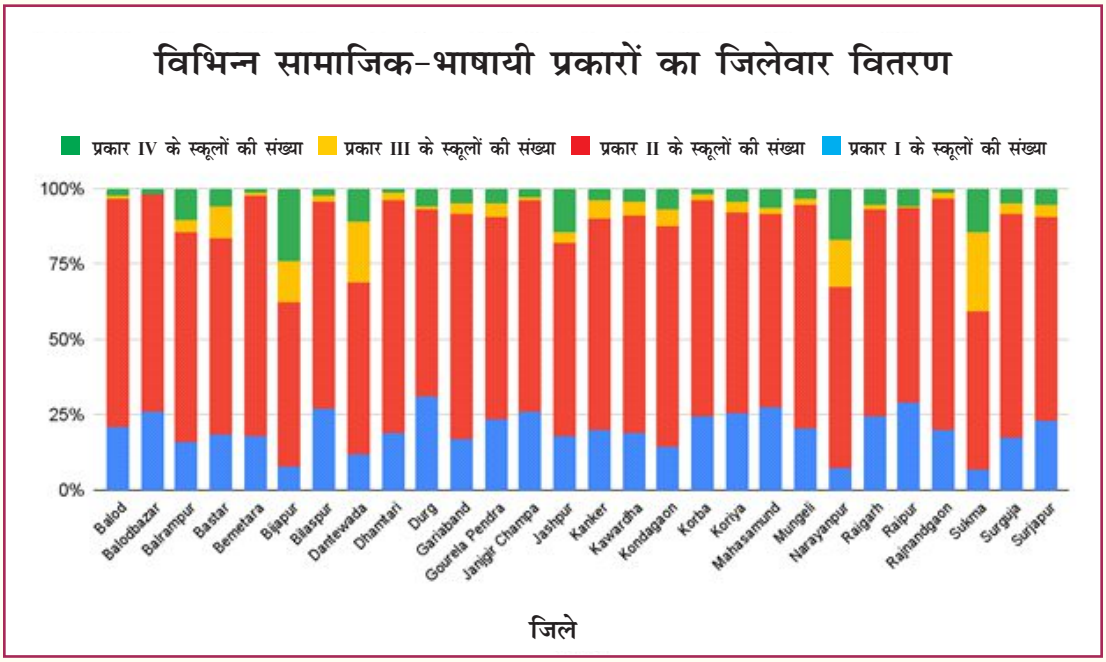

जिला	प्रकार I के स्कूलों की संख्या	प्रकार II के स्कूलों की संख्या	प्रकार III के स्कूलों की संख्या	प्रकार IV के स्कूलों की संख्या
बालोद	168	611	11	18
बलौदाबाजार	297	825	4	19
बलरामपुर	186	811	46	120
बस्तर	241	861	136	79
बेमेतारा	128	571	8	10
बीजापुर	30	205	53	90
बिलासपुर	263	664	21	21
दंतेवाड़ा	68	321	112	62
धमतरी	162	667	19	13
दुर्ग	163	328	5	32
गरियाबंद	153	683	31	44
गौरेला पेंड्रा मरवाही	94	273	17	20
जांजगीर चांपा	368	1005	19	37
जशपुर	246	866	52	194
कांकेर	291	1013	89	58

जिला	प्रकार I के स्कूलों की संख्या	प्रकार II के स्कूलों की संख्या	प्रकार III के स्कूलों की संख्या	प्रकार IV के स्कूलों की संख्या
कवर्धा	181	687	46	40
कोंडागाँव	156	790	58	77
कोरबा	346	1014	27	27
कोरिया	188	489	26	33
महासमुंद	322	748	26	73
मुंगेली	128	459	11	22
नारायणपुर	22	175	46	49
रायगढ़	436	1225	25	93
रायपुर	197	435	3	41
राजनांदगाँव	356	1353	36	27
सुकमा	37	285	141	79
सरगुजा	214	921	43	58
सूरजपुर	263	769	46	61

परिशिष्ट ज

पद्धति 1 का विवरण : मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (MTB-MLE)

ब्यौरा : प्राइमरी शिक्षा के पहले 4–5 साल तक बच्चों की L1 भाषा को शिक्षण के माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। कक्षा–1 के पहले 2–3 साल तक बच्चों की मातृभाषा में एक बढ़िया पूर्व प्राथमिक शिक्षण कार्यक्रम लागू किया जाए तो इससे बच्चों को L1 में बढ़िया मौखिक कौशल प्राप्त होगा और 6–7 साल तक बच्चों की L1 भाषा का इस्तेमाल किया जा सकेगा (पूर्व प्राथमिक शिक्षा में 2–3 साल और प्राइमरी स्कूल में 4–5 साल)।

इस पद्धति में बच्चे पहले L1 भाषा में साक्षरता कौशल प्राप्त करते हैं। राज्य की भाषा, जो कि बच्चों के लिए L2 है, उसका कक्षा–2 से एक विषय के रूप में मौखिक रूप से परिचय कराया जाता है और उसके बाद L2 में साक्षरता कौशलों पर काम किया जाता है। अंग्रेजी जैसी किसी तीसरी भाषा को कक्षा–3 से एक विषय के रूप में शुरू किया जा सकता है। पहले इसे मौखिक तौर पर पढ़ाया जाए और आगे की कक्षाओं में पढ़ना–लिखना सिखाया जाए। जब बच्चे L2 भाषा में थोड़ी अकादमिक दक्षता हासिल कर लें तो उसे माध्यम के तौर पर भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका एक अच्छा मॉडल ये है कि एक या दो वर्ष तक L1 और L2 दोनों भाषाओं को माध्यम के तौर पर इस्तमाल किया जाए, जब L2 ही माध्यम के रूप में अकेली भाषा रह जाए तो भी L1 और अंग्रेजी को विषयों के रूप में पढ़ाना जारी रखा जाए। जब माध्यम के तौर पर L1 की जगह L2 को अपना लिया गया हो, तब भी कक्षा में L1 को जगह मिलती रहनी चाहिए। कठिन अवधारणाओं को समझाने के लिए, बच्चों की समझ को परखने के लिए और बच्चों के उच्च स्तरीय चिंतन और अभिव्यक्ति को मापने के लिए कक्षा में L1 का इस्तेमाल जारी रहने देना चाहिए।

ये सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है कि

(क) L2 को माध्यम के तौर पर अपनाने से पहले बच्चे L2 में पर्याप्त निपुणता हासिल कर लें, और

(ख) L1 भाषा में सीखी गई अवधारणाओं व कौशलों को उचित तरीके से L2 में स्थानांतरित किया जाए।

MTB-MLE के इस मॉडल को एडिटिव या संवर्द्धल मॉडल कहा जाता है, जिसमें L1 को हटाए बगैर अतिरिक्त भाषाओं को पाठ्यचर्या में शामिल किया जाता है। यहाँ L2 को माध्यम के तौर अपना लेने के बाद भी L1 को एक विषय के रूप में जारी रखा जाता है (उदाहरण के लिए कक्षा–8 तक)। इसके उलट सबट्रैक्टिव या ऋणात्मक पद्धति वह होती है, जिसमें L2 को अपना लेने के बाद L1 को पाठ्यचर्या से हटा लिया जाता है। सबसे उपयुक्त MTB-MLE पद्धति लेट एक्जिट पद्धति होती है, जिसमें माध्यम के तौर पर L2 को कम से कम 5 वर्ष के प्राइमरी स्कूल के बाद ही अपनाया जाता है। यहाँ तक आते–आते बच्चों के पास L2 भाषा में पढ़ने और लिखने सहित अच्छी–खासी समझ आ जाती है और वे पाठ्यपुस्तकों में दी गई सामग्री को पढ़कर भली–भाँति समझने लगते हैं। दूसरी तरफ अर्ली एक्जिट मॉडल वो होता है, जिसमें L1 के स्थान पर L2 को माध्यम के तौर पर अपनाने के लिए प्राइमरी स्कूल के दो–तीन वर्ष ही दिए जाते हैं। अर्ली एक्जिट मॉडल से बच्चों को सबसे कम फायदा होता है, क्योंकि उन्होंने L2 के माध्यम से पढ़ने के लिए अभी पर्याप्त निपुणता हासिल नहीं की होती है। इसके अलावा, L1 में सिखाए गए कौशल व अवधारणाएँ भी अभी इतनी परिपक्व नहीं होतीं कि उन्हें L2 में आसानी से स्थानांतरित किया जा सके। हमारे देश में MTB-MLE को केवल एक ही राज्य– ओडिशा में स्थिर ढंग से लागू किया गया है। यह कार्यक्रम 2005 में शुरू किया गया था और फिलहाल इसे राज्य के 21 आदिवासी भाषी एवं अन्य स्थानीय भाषाओं वाले 1500 स्कूलों में लागू किया जा रहा है।

आवश्यकताएँ :

- यह एक सघन पद्धति है और इसके लिए ठोस नीतिगत एवं राजनीतिक सहायता की जरूरत होती है। औपचारिक शिक्षण में गैर–प्रभुत्वशाली भाषाओं को लागू करने के लिए समुदाय की सहमति भी जरूरी होती है।

- MTB-MLE कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए समुदाय को साथ लेकर चलना भी जरूरी है। इससे स्कूल-समुदाय के बीच दृढ़ संबंधों की आधारशिला रखने में मदद मिलती है।
- यदि संबंधित भाषा लिखी नहीं गई है तो सरकारी भाषा की लिपि की मदद से उसको लिखने की व्यवस्था और आवश्यकता के अनुसार अतिरिक्त शब्दावली विकसित करने की जरूरत भी पड़ सकती है।
- L1 में भाषा व अन्य विषयों की पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री तैयार करते समय स्थानीय ज्ञान व संस्कृति के समावेश पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- इस तरह की पद्धति की सफलता के लिए द्विभाषी या त्रिभाषी (मातृभाषा, सरकारी भाषा, अंग्रेजी आदि) स्थानीय शिक्षक बहुत उपयोगी होते हैं।
- प्रथम एवं द्वितीय भाषा अध्यापन शिक्षाशास्त्र को लागू करने के लिए नियमित अकादमिक सहायता के साथ-साथ शिक्षकों का सघन और सतत पेशेवर विकास करते रहना भी बहुत जरूरी है।

पद्धति 2 का विवरण : बच्चों की प्रथम भाषा (L1) का मौखिक रूप से व्यापक और रणनीतिक प्रयोग और बच्चे की अपरिचित भाषा (L2) शिक्षण का औपचारिक माध्यम

विवरण : कक्षा-1 से ही एक अपरिचित भाषा का माध्यम के तौर पर इस्तेमाल शुरू हो जाता है, (जैसे- जिस इलाके में घर की भाषा बुंदेली है, वहाँ हिन्दी माध्यम)। ऐसे में बच्चों को प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के पहले 2-3 साल के दौरान अपनी घर की भाषा को निखारने का मौका मिलेगा। समूची प्राइमरी शिक्षा के दौरान बच्चों की L1 भाषा का मौखिक रूप से व्यापक और रणनीतिक रूप से इस्तेमाल किया जाता है। नई अवधारणाओं को समझने, सभी प्रकार के उच्चस्तरीय चिंतन और तर्कशीलता के लिए तथा शुरुआती कक्षाओं में किसी भी तरह की मौखिक अभिव्यक्ति के लिए L1 का ही सहारा लिया जाता है। शुरुआती कक्षाओं में दूसरी भाषा के शिक्षण व अधिगम के लिए प्रभावी रणनीतियों का इस्तेमाल किया जाता है, जिनमें L2 की शब्दावली की सुनियोजित शिक्षा और L2 को सीखने में मदद देने के लिए L1 का स्कैफोल्डिंग/सहारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। कक्षा में L1 और L2 का संतुलित ढंग से इस्तेमाल किया जाता है। किसी भी समय पर L1 और L2 के इस्तेमाल का कोई फॉर्मूला और मात्रा तय नहीं होती, बल्कि शिक्षक को खुद इस बात का अनुमान लगाना होता है कि बच्चों की समझदारी और L2 को बोलने की क्षमता व उसकी समझ का क्या स्तर है, इसके आधार पर ये तय करना होता है कि इन भाषाओं का किस हद तक इस्तेमाल किया जाएगा। प्रवाहशील अभिव्यक्ति के लिए भाषाओं के मिश्रण को सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा माना जाता है।

बहुभाषी शिक्षा के इस मॉडल की मुख्य रणनीतियाँ:

1. आरम्भ में सीखने-सिखाने का सारा काम बच्चों की घर की भाषा में ही करें।

- प्रारंभिक कक्षाओं (कम से कम कक्षा 2 तक) सभी विषयों में जटिल अवधारणाएँ या नई जानकारी समझाने, उच्च स्तरीय चिंतन, तर्क, विश्लेषण, रचनात्मक अभिव्यक्ति और अर्थ-निर्माण के लिए बच्चों के घर की भाषा का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाए।
- प्रारंभिक कक्षाओं के बाद भी, बच्चों के घर की भाषा या परिचित भाषा का औपचारिक और रणनीतिक प्रयोग किसी भी जटिल अवधारणा या उच्च स्तरीय कार्य में मदद के रूप में कक्षा-8 तक किया जाना चाहिए।
- इनके साथ-साथ, प्रारंभिक कक्षाओं में घर की भाषा/मातृभाषा की मदद से डिकोडिंग सिखाई जानी चाहिए। इसके लिए L1 के बहुत से संदर्भित शब्दों के साथ स्तर के अनुरूप और सरल L2 के शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। L1 शब्दों/वाक्यों के प्रयोग से बच्चों के लिए अर्थ-निर्माण और समझना तो सुनिश्चित होता ही है, वे साथ में

डिकोडिंग की प्रक्रिया भी सीखते हैं।

कुछ ठोस सुझाव:

- स्कूल के प्रति बच्चों में एक मजबूत भावनात्मक संबंध बनाने और उन्हें कक्षा में सहज करने के लिए स्कूल में दाखिला लेने के पहले कुछ महीनों में सभी प्रकार की अनौपचारिक और औपचारिक बातचीत के लिए केवल बच्चों की भाषा का प्रयोग करें।
- यह भी सुनिश्चित करें कि बच्चों को प्रारंभ से ही उनके घर की भाषा में स्थानीय कहानियों, कविताओं, गीतों, पहेलियों आदि का अनुभव मिले। सीधे पाठ्यपुस्तक का प्रयोग न करें।
- सबसे पहले, बच्चों की घर की भाषा में ध्वनि जागरूकता का विकास किया जाए। उसके बाद L2 के सरल शब्दों को शामिल किया जा सकता है। जब बच्चों में L1और L2, दोनों भाषाओं की ध्वनि जागरूकता की अच्छी समझ विकसित हो जाए, तभी L2 में डिकोडिंग की ओर बढ़ना चाहिए।
- इनके साथ-साथ स्कूल की भाषा में बच्चों के शब्द-भंडार को बढ़ाने में मदद करने के लिए प्रारंभिक महीनों में कुछ रोचक और मजेदार गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं।

2. बच्चों के स्तर के अनुरूप घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित, सोचा-समझा और रणनीतिक इस्तेमाल करें।

- बच्चों के घर की भाषा का उपयोग नई या कठिन अवधारणाओं को समझाने, उच्च स्तरीय सोच और अभिव्यक्ति के लिए किया जाना चाहिए।
- स्कूल की भाषा का उपयोग सामान्य चर्चा, परिचित विषयवस्तु और सरल अवधारणाओं को समझाने के लिए किया जाना चाहिए।
- स्कूल के कम से कम पहले दो वर्षों तक लेखन कार्यों में भी विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषाओं का मिश्रण करने की अनुमति/प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

3. घर की भाषा और स्कूल की भाषा के मिले-जुले इस्तेमाल को प्रोत्साहित करें।

- किसी भी समय बच्चों की भाषायी दक्षता के स्तर के आधार पर ही बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा के मिश्रण का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए। इसका कारण यह है कि बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा के प्रयोग की सीमा का कोई सूत्र नहीं हो सकता है। इन भाषाओं के प्रयोग को किस प्रकार समायोजित किया जाए, यह निर्णय लेने के लिए शिक्षक को बच्चों की समझ और स्कूल की भाषा बोलने की क्षमता के स्तर की जानकारी की आवश्यकता होती है।

कक्षाओं में मिश्रित भाषा के प्रयोग के कुछ उदाहरण:

- शिक्षक और/या बच्चे L1 वाक्य में L2 शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- शिक्षक और/या बच्चे L2 वाक्य में L1 शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- बच्चे L1 में बोलते हैं और शिक्षक L2 में जवाब देते हैं।
- बच्चे L2 में बोलते हैं और शिक्षक L1 में जवाब देते हैं।
- शिक्षक L2 में बोलते हैं और बच्चे L1 में जवाब देते हैं।

- शिक्षक L1 में बोलते हैं और बच्चे L2 में जवाब देते हैं।
- शिक्षक और/या बच्चे सहजता से अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग वाक्य बोलते हैं।
- शिक्षक और/या बच्चे दो भाषाओं को मिलाकर नए शब्द या वाक्य बनाते हैं।

4. पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए बच्चों के घर की भाषा की मदद लें।

- प्रारंभ के कुछ महीनों में, रोचक, मजेदार और सरल L2 कविताओं, हाव-भाव के साथ गीत, कहानियों और TPR (Total Physical Response – पूर्णत: शारीरिक प्रतिक्रिया) जैसी गतिविधियों से L2 शब्दावली शिक्षण पर ध्यान केंद्रित करें। एक भाषा में औपचारिक शिक्षण प्रारंभ होने से पहले यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे के पास उस भाषा की बुनियादी शब्दावली हो।
- घर की भाषा के परिचित शब्दों की मदद से डिकोडिंग सिखाएँ। मिली-जुली भाषा में लिखित अभिव्यक्ति को स्वीकार करें।
- दूसरी भाषा/स्कूल की भाषा अर्जित करने के लिए बच्चों को बहुत से अवसर प्रदान करें। स्कूल की भाषा के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री बच्चों के स्तर की, सरल, अर्थपूर्ण और उन्हें समझ आने वाली होनी चाहिए। बच्चों को एक तनाव रहित वातावरण में स्कूल की भाषा का उपयोग करने के लिए उद्देश्यपूर्ण, आनंददायक और अर्थपूर्ण अवसर दिए जाने की आवश्यकता है। बच्चे दूसरी भाषा/स्कूल की भाषा का उपयोग करने में सहज महसूस करें, इसके लिए चिंता मुक्त और भय मुक्त वातावरण बनाएँ।
- बच्चों को स्वाभाविक रूप से कोई भाषा अर्जित करने के लिए एक प्रेरणादायी और चिंता मुक्त स्थान में रहने की आवश्यकता है। व्याकरण, उच्चारण आदि संबंधी त्रुटियों को बार-बार सुधारने से बचना चाहिए। प्रारंभिक स्तर पर भाषा के रूप के स्थान पर उसकी समझ और संप्रेषण पर ध्यान होना चाहिए। यदि प्रारंभ के कुछ महीनों में बच्चे केवल अपनी घर की भाषा में जवाब दें तो उन्हें हतोत्साहित न करें। धीरे-धीरे, स्कूल की भाषा में बच्चों की दक्षता के विकास के अनुसार, बच्चों द्वारा मिश्रित भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

कुछ ठोस सुझाव:

- L2 को बच्चों के समझने योग्य बनाने के लिए कई तरीके उपयोग किए जा सकते हैं, जैसे: L2 के सरल शब्द और वाक्य, पाठ्यसामग्री समझाने के लिए बहुत से चित्र और मूर्त वस्तुएँ, शरीर की भाषा और हाव-भाव, धीरे-धीरे और स्पष्ट बोलना आदि। L2 समझने में मदद करने के लिए बच्चों के घर की भाषा का प्रयोग करना सबसे महत्वपूर्ण रणनीति है और सभी को इसे लागू करना चाहिए।
- द्वितीय भाषा विकास के लिए सरल और मजेदार मौखिक गतिविधियों को लागू किया जा सकता है: बच्चों के अनुभवों पर बातचीत करना, कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ, रोल-प्ले आदि। साथ ही, बच्चों के स्तर के अनुसार उनके घर की भाषा का पर्याप्त और रणनीतिक सहयोग लेना आवश्यक होगा।
- एक अपरिचित या स्कूल की भाषा का समृद्ध वातावरण देने के लिए पाठ्यपुस्तकें ही काफी नहीं होती हैं। बुनियादी वर्षों में स्कूल की भाषा को सहज और आनंददायक रूप से सीखने में बच्चों की मदद करने के लिए मौखिक साक्षरता हेतु मददगार उच्च-गुणवत्ता की शिक्षण सामग्री जैसे- बिगबुक, कविताओं के पोस्टर, सरल कहानियों की पुस्तकों आदि का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए।

5. सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में (सिर्फ बच्चों की भाषा ही नहीं) बच्चों के पूर्वज्ञान, संस्कृति और संदर्भों को (भी) शामिल करें।

पाठ्यपुस्तकें, कार्य-पुस्तिकाएँ, कहानी की पुस्तकें, कविताओं के पोस्टर आदि जैसी शिक्षण सामग्रियों में स्थानीय संस्कृति के संदर्भों का उपयोग किए जाने की आवश्यकता है। बच्चों के जीवन से जुड़े संदर्भों को अकादमिक सामग्री, भाषा के प्रयोग और शिक्षण प्रक्रियाओं में उपयुक्त स्थान दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए- डूंगरपुर, राजस्थान में वागड़ी भाषा बोलने वाले बच्चों के लिए लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन द्वारा बनाई गई। बिगबुक 'गीता जाने गई' में विवाह समारोह के दौरान जमीन पर बैठकर लड्डू, जलेबी और लप्सी खाने की स्थानीय प्रथाओं को दर्शाया गया है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ:

- गुणवत्तायुक्त शाला-पूर्व/प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम क्रियान्वित किए जाने चाहिए, जो L1 के मौखिक विकास का समर्थन करते हैं।
- शिक्षकों की L1 और L2 के साथ अंग्रेजी भाषा में निपुणता होनी चाहिए।
- शिक्षक को बच्चे के L1 का सम्मान करना चाहिए और उसके उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- बच्चों की संस्कृति और स्थानीय संदर्भों को कक्षा के कार्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
- L2 सिखाने के लिए, विशेषकर अर्थ-निर्माण के लिए, उचित तरीकों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- सीखने का आकलन करते समय L2 सीखने में हो रही देरी का ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रत्येक कक्षा के लिए सीखने के अपेक्षित परिणामों को परिभाषित करते समय इसे सकारात्मक रूप से शामिल किया जाना चाहिए। उचित वातावरण मुहैया कराने पर ऐसे विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर के अंत तक L2 का अपेक्षित स्तर और अंग्रेजी भाषा के कौशल प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए।

सम्पर्क करें:

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन

ऑफिस पता: डी-26, एन.डी.एस.ई. पार्ट-2, फ्रंट ग्राउंड फ्लोर,

नई दिल्ली-110049 • फोन: 011-26106045

वेबसाइट: https://languageandlearningfoundation.org

ई-मेल: info@languageandlearningfoundation.org